[श्री प्र० चं० सेठी]

में है। कल मैंने कहा था कि श्री जार्ज फरनान्डीज पोलिटीकल सेन्सेशन क्रियेट करने के लिये अपना एक दृष्टिकोण बनाते हैं और अपने आप कुछ नतीजों पर पहुंच जाते हैं। यह बात ठीक है कि जो पत्र उन्होंने प्राइम मिनिस्टर को लिखा था, वह 18 मार्च को लिखा था, उसके बाद उसको बैंकिंग डिपार्टमेंट को इमिडियेट एक्शन के लिये भेज दिया गया। मि० हक्सर के पास जो पत्र आया, भेजने वाले का नाम न बताते हुए, उस पत्र का एक्सट्रेक्ट बैंकिंग डिपार्टमेन्ट को भेजा गया.....

श्री मधु लिमये : पूरी कापी भेजी गई।

श्री प्र० चं० सेठी : एक्सट्रैक्ट भेजा गया ...(**व्यवधान**)...इस समय मुझे बोलने दीजिये आपको जो कुछ कहना हो, बाद में कहिये। अगर पूरी कापी होती, तो नामुमकिन था कि उसके भेजने वाले का नाम-पता न होता। जो जार्ज फरनेन्डीज ने पढ़ा है उसमें बहुत स्पष्ट कहा गया है कि अभी मेरे नाम का उनको पता नहीं चला है। अगर हक्सर साहब के पत्र की पूरी प्रतिलिपि होती तो भेजने वाले का नाम उनको मालूम होता। इसलिये भेजनेवाले का नाम बैंकिंग डिपार्टमेंट को दिया था, न बैंकिंग डिपार्टमेंट से सेन्ट्रल बैंक के पास गया और न सैन्ट्रल बैंक से कमेन्ट्स के लिए जो पत्र सामी पटेल के पास गया, उसमें था। रमण सी० शाह के पास जो खबर पहुंची, वह अपने सोर्स से पहुंची होगी, वह सोर्स क्या है, यह देखने की बात है। लेकिन यह बात स्पष्ट है कि मि० हक्सर को प्राप्त हुए किसी पत्र की कोई प्रतिलिपि नहीं पहुंची। अगर पहुंची होती तो इन्फौमेंट का नाम, जिसको उन्होंने नहीं बताया है, एक्सट्रैक्ट में भी नहीं बताया है, बैंकिंग डिपार्टमेंट को भी नहीं बताया है और जो स्टेटमेंट मैंने दिया है, उसमें भी नहीं है। ऐसी सूरत में फर्नेन्डीज साहब का जो कहना है, यह अलावा पोलिटीकल सेन्सेशन के कुछ नहीं है।

17.00 hrs.

MR. DEPUTY-SPEAKER : We will now take up discussion on the communal situation.

SHRI NATH PAI (Rajapur) : Apart from sensationalism, what about some of the points raised ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : I am sorry. I cannot allow it. Shri Fernandes.

SHRI NATH PAI : Sir, you cannot summarily dismiss us. Whatever be the importance of the subject, you show a tendency to summarily brush it aside. We are also recipients of this letter. It is a serious matter. What about the charge that the General Manager was compelling poor people who went to the bank to go to a private man who was lending money. The Minister never said anything about it. It is a serious matter.

MR. DEPUTY-SPEAKER : It is no doubt serious. But this discussion cannot be concluded in one or two minutes.

SHRI NATH PAI : Then make it ten minutes.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The rules do not permit that.

SHRI NATH PAI : You could have asked the Minister to give a reply.

———

17.01 hrs.

DISCUSSION RE : RECENT COMMUNAL DISTURBANCES IN THE COUNTRY—(*Contd.*)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, रूल 193 के अन्तर्गत यह चर्चा हो रही है उसमें मैं जवाब दूं, इसका कोई प्राविधान नहीं है लेकिन चर्चा में बहुत सी ऐसी बातें कहीं गई हैं जिनके बारे में मुझे स्पष्टीकरण करना होगा। मैं चाहता हूं कि आप गृह मन्त्री के बोलने के पहले मुझे थोड़ा सा समय दें ताकि

व्यक्तिगत स्पष्टीकरण के नाते अपनी बात कह सकूं ।

MR. DEPUTY-SPEAKER : We will consider that.

श्री जार्ज फरनेन्डीज (बम्बई दक्षिण) : अध्यक्ष महोदय, सम्प्रदायवाद पर जब भी बहस होती है उसमें एक किस्म का नकलीपन हमें हमेशा नजर आता है । गुस्सा-गुस्सी तो दोनों तरफ से 14 तारीख को यहां पर चला लेकिन उसमें भी कुछ नकलीपन था । कितनी गम्भीरता के साथ इस मामले पर हम लोग विचार कर रहे हैं उसका सबूत उसी दिन शाम को हम लोगों के सामने आया कि दो बार घंटी बजने के बाद भी इस सदन में 40-45 लोगों की हाजिरी नहीं हो पाई । इसी नकलीपन का एक और नमूना भिवंडी और जलगांव के दंगों के बाद हमें पढ़ने को मिला । इंदिरा कांग्रेस की कोई बैठक हो गई, उस बैठक की रिपोर्ट हम लोगों को पढ़ने के लिए मिली । उसमें यह कहा गया—शायद प्रधान मन्त्री के मुंह से निकली हुई बात या अन्य किसी व्यक्ति की :

"Riots in the Bhiwandi and Jalgaon should be an eyeopener to all of us."

कुछ समझ में नहीं आता जलगांव और भिवंडी के साम्प्रदायिक दंगे होने तक पिछले 22 सालों में जितने दंगे चलते रहे उनमें से किसी ने भी आपकी आंखें नहीं खोलीं अहमदाबाद में आपकी आंखें नहीं खुलीं, जबलपुर में, रांची में, देश के कोने कोने में हुए जातीय दंगों ने आप लोगों की आंखें नहीं खोलीं । हमेशा जब इस किस्म की परिस्थिति सामने आती है तब यह बात कही जाती है कि मामला बहुत गम्भीर है, बड़ी गम्भीरता के साथ सोचना चाहिए, 8-10 दिनों तक अखबारों में दंगाग्रस्त इलाकों की खबरें आती हैं, वहां भी एक-आध प्रश्न उठते है, बयानात होते हैं और फिर मामला खत्म हो जाता है । आगे कोई भी ठोस निर्णय लेने वाली बात पर हम कभी नहीं पहुंचे है । भिवंडी और जलगांव के मामलों पर जब यहां बहस होती है, मैं जानता हूं इस सदन के कई सदस्य वहां जाकर के देखकर आये हैं और वहां की हालत से काफी अवगत हैं लेकिन दो बातों पर इस बहस के दरमियान हम चाहेंगे कि कुछ सफाई से हम लोग कहें और सफाई से जिन पर विचार करें । पहले तो जो दंगे जलगांव और भिवंडी, दो शहरों और उसके आसपास के गांवों में हुए उसके बारे में । दूसरे इन दंगों के पीछे जो बुनियादी कारण हैं उनके बारे में भी कुछ गम्भीरता से हम लोग सोचें ।

17.03 hrs.

[Shri Shri Chand Goyal *in the Chair*]

जहां तक भिवंडी के दंगों का मामला है, उस दिन हमारे मित्र श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने बड़े गुस्से से यह कहा, वहां के दंगों का विवरण देते हुए, कि मुसनमानों की ओर से शर्त रखी गई थी कि जुलूस को कैसे निकाला जाये, जुलूस में क्या-क्या बोला जाये । मैं समझता हूं बाजपेयी जी को या तो गलत जानकारी हुई या फिर इस मामले में उनकी जानकारी अधूरी रही क्योंकि वहां के मुसलमानों की ओर से 18 अप्रैल को पीस कमेटी के सामने एक निवेदन देखने में आया, उस निवेदन में वहां के मुस्लिम समाज के नेताओं ने, जो बातें उनको कहनी थीं शिव जयन्ती के जुलूस के बारे में, वह बहुत विस्तार से पेश कीं । उसकी एक कापी मैं यहां ले आया हूं । सात पेज का उन का एक निवेदन है । जो बातें माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी ने कहीं कि शर्तें लगायी गयीं कि कैसे जुलूस निकलेगा, कौन झंडा लिया जायगा, ऐसी कोई बात नहीं थी । मैं उनके सुझावों को पढ़कर सुनाना चाहता हूं ।

"In view of the fact that usually trouble springs from certain aspects of the procession taken out on Shiv Jayanti, we suggest the following measures, so as to avoid any ugly incident :

(1) No gulal should be used.

[श्री जार्ज फरनेंडीज]

(2) No provocative and abusive slogans should be shouted.

(3) Being a national festival,"—

जिसमें वह भी हिस्सा लेने वाले थे ।

"the procession should have no *Bhagwa* flags.

(4) The route of the procession should be fixed in order to avoid potential trouble spots."

एक विनती थी, और एक सुझाव था । मैंने वहां के मुसलमान समाज के नेताओं से बातें कीं । मैंने पूछा कि क्यों गुलाल के बारे में आपने विरोध किया । तो उन्होंने कहा कि आज तक का हमारा अनुभव यह रहा है कि जब जुलूस निकलता है तो मस्जिद पर गुलाल फेंकने का प्लान बहुत बड़े पैमाने पर होता है ।

मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता । मैं चाहता हूं कि असलियत को जरा हम ठीक ढंग से समझें ।

दूसरी बात यह जो पूछी जाती है कि पहले पत्थर किसने मारा ? तो मैं नहीं समझता कि किसी भी सामप्रदायिक दंगे में कौन पहला पत्थर मारता है यह मतलब की बात नहीं होती है । क्योंकि जब जुलूस शुरू हुआ तो पुलिस कमिश्नर, डी० एस० पी० और कलेक्टर के रहते हुए कहा गया कि नारे नहीं लगाये जायेंगे, लेकिन नारे दिये गये । गिरफ्तारी हो गयी और पुलिस को आश्वासन देकर कि नारे नहीं लगायेंगे गिरफ्तार लोगों को छुड़ाकर बाहर निकाला गया और फिर वही नारे दिये गये । अगर जमीन से उठाकर मारने को ही पत्थर कहा जाता है, तो कैसे काम चलेगा । दोनों तरफ बहुत बड़े पैमाने पर तैयारी थी, मैं इस बात को छिपाना नहीं चाहता । भिवंडी में दोनों तरफ से तैयारी थी । लेकिन जलगांव के बारे में महाराष्ट्र टाइम्स के सम्पादक ने रिपोर्ट भेजी है ।

यह हकीकत है, इसको कोई नहीं छिपा सकता । और भिवंडी के दंगे के बाद जब जलगांव में एक तरफा आक्रमण, नुकसान और परेशानी होती है तो बात साफ होती है कि तैयारी एक अर्से से रही । सोडा वाटर की बोतलें कहीं भी मिल सकती हैं लेकिन बम और पोलोटोव काकटेल भी वहां पर पकड़ी गयीं और उनका बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया ।

दंगे के पहले जो भाषण हुए थे, मुसलमानों ने निवेदन किया था, जिसका पहला वाक्य है ।

"Bhiwandi has a glorious tradition of communal peace and harmony which has come down from centuries together."

आगे उन्होंने विस्तार में कहा है कि कैसे दोनों कोमों में रिश्ते रहें । लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी जी से प्रार्थना है कि डा० व्यास की जो तकरीरें हो गई, उनके बारे में जानकारी दें । डा० व्यास जनसंघ के भिवांडी शाखा के अध्यक्ष हैं । डा० व्यास ने कई तकरीरों में कहा है कि यह जो कहता है कि भिवांडी में कभी जातीय दंगे नहीं हुए, वह बेवकूफ है, उसको कुछ मालूम नहीं है 174 वर्ष पहले 1896 में इस शहर में दंगे हुए हैं । कौन सा वह बेवकूफ है जो कहता है कि यहां पर दंगे नहीं हुए । महाराष्ट्र सरकार से पूछिये, भिवांडी के व्यक्तियों से पूछिये तो आपको जवाब मिलेगा कि इस किस्म के भाषण वहां पर हुए । डा० व्यास के अलावा प्रोफेसर रमेश और संतोष के भी देखें कि क्या-क्या बातें नहीं कही गई ।

इसलिए पहले पत्थर वाले मामले पर हम लोगों को न जाते हुए इन चीजों को जिस ढंग से, जिन बातों से, जिस व्यवहार से, जिस पार्श्वभूमि से पकाया जाता है उनमें हम लोगों को जाना चाहिए । इसलिए अध्यक्ष महोदय बुनियादी प्रश्न पर हम आते हैं कि क्यों इस किस्म की हालत बनती है । तमाम राजनीतिक दल इसके लिए जिम्मेदार हैं । प्रधान मन्त्री ने उस दिन बहुत गुस्से में आकर अटल बिहारी वाजपेयी जी की बातों का खंडन किया । क्या प्रधान मन्त्री इससे मुक्त हैं ? मैं आपको याद

दिलाऊं कि डा० लोहिया के चुनाव क्षेत्र में 1967 में जाकर श्रीमती गांधी ने उनके विरुद्ध क्या प्रचार किया था मुसलमानों के बीच में जाकर। डा० लोहिया के खिलाफ यह प्रचार किया था कि डा० लोहिया तुम्हारे पर्सनल ला को मिटाना चाहते हैं, इनको वोट नहीं देना पर्चे निकले और एकाएक ये बातें आज यहां पर कही जाती हैं। तो जातीयता दोनों तरफ से बढ़ती है। अध्यक्ष महोदय, सम्प्रदायवाद को एक तरफा चीज करके न लें, यह दोनों तरफ से चलता है। हिन्दू-सम्प्रदायवाद मुसलमान-सम्प्रदायवाद पर पलता है और उसी ढंग से मुसलमान-सम्प्रदायवाद हिन्दू-सम्प्रदायवाद पर पनपता है, उसी पर पलता है और विकसित हो जाता है। इसलिए आज तक देश में जिस किस्म की राजनीति को एक अरसे से हम लोगों ने हिन्दुस्तान में चलाया, उसके कारण आज हम सब लोगों ने अपनी जिम्मेदारी को उठाकर और आज तक की बिगड़ी हुई हालत को सुधारने का प्रयत्न करना पड़ेगा।

उस दिन यहां पाटिल साहब ने बहुत बड़ी बात कही। सब लोगों के दिल को अपील करने वाली बात कही। लेकिन पाटिल साहब जरा अन्तर्मुख होकर सोचें कि उन्होंने सन 1967 के चुनाव में इनकी सभा में यह कहा करते थे कि अगर उनको जिताकर आप भेजोगे तो डा० जाकिर हुसैन को राष्ट्रपति बनाया जाएगा। सवा लाख मुसलमानों के वोटर वहां हैं। मैंने उसका हमेशा जवाब दिया था, अध्यक्ष महोदय, कि डा० जाकिर हुसैन को आप राष्ट्रपति बना देंगे लेकिन हमारा जो अब्दुल रहमान फेरी वाला है वह तो फुटपाथ पर ही सोयेगा। डा० जाकिर हुसैन तो राष्ट्रपति बनकर 1200 एकड़ बगीचे में साढ़े तीन सौ कमरे के राष्ट्रपति भवन में पहुँच जाएंगे, लेकिन यह जो तरीका है चुनाव में और सार्वजनिक कामों में इस तरह का सिलसिला जो है, जब तक इस पर रोक लगाने का कोई ठोस फैसला हम लोग नहीं करेंगे, तब तक यह काम, गुस्से से, नहीं होगा। प्रधान मन्त्री ने बम्बई में, भिवांडी में और जलगांव में और यहां भी पत्रकारों से कहा कि 'वी शैल फाइट'। बड़े गुस्से में आकर कहा 'वी शैल फाइट'। हम देख रहे हैं 20 साल से आपकी फाइट। तीन करोड़ मुसलमानों के वोट और उनको मद्देनजर रखकर आपने कदम बढ़ाये, क्या कदम उठायेंगे आप? उनकी वोटों को मद्देनजर रखकर आपने कदम बढ़ाये, उसके सिवाय आपने कोई काम नहीं किया और आज भी अगर सिर्फ वोटों को मद्देनजर रखकर आप 3 करोड़ वोटरों से एक नम्बर की सीट पर बैठकर अपील करने का काम करोगे तो उससे हिन्दुस्तान में सम्प्रदायवाद को मिटाने का काम नहीं हो जाएगा। ऐसे आप कोई मंच बनाकर सैकुलर फौरम बनायें, इनके मार्फत बयानात देकर क्योंकि सत्ता आपके हाथ में है, आप काम नहीं चला सकते। भिवांडी में बसंत राव नाइक ने क्या कहा। भिवांडी में दंगे शुरू होने से पहले वह एक बार नहीं दस बार लोगों से जाकर मिले। मुख्य मन्त्री और गृह मन्त्री ने क्या किया? कुछ करने की बात रहने दीजिये, 7 तारीख के पहले, हमें श्री चव्हाण बतलायें कि क्या यह सही नहीं है कि 7 तारीख से 10 तारीख तक जब बम्बई से 30 किलो मीटर दूरी पर दंगा होता है तब चूंकि आप वहां पहुंच गये इस लिये महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री और गृह मंत्री वहां आप के साथ चले गये वर्ना उन के वहां जाने की बात नहीं थी?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI Y. B. CHAVAN): He came a day before.

श्री जार्ज फरनेन्डीज: वहां की विधान सभा में जब बहस हुई इस मामले पर तब भी उन का क्या व्यवहार रहा? 10 तारीख को थाना में दंगा होने के पहले मैं खुद थाना शहर में था। भिवण्डी शहर की परिस्थिति देख कर मैं थाना पहुँचा था। मैं अपने एक मित्र के घर में रहा। जब वहां पहुँचा तो एक मुसलमान

[श्री जार्ज फरनेंडीज]

दौड़ कर आया और बोला कि एक, पति-पत्नी को अभी-अभी एक मोहल्ले में लाठी से मार कर खत्म किया गया है। दूसरे दिन अखबारों में यह खबरें आ गई। यह 10 तारीख की शाम के साढ़े 6 बजे का किस्सा है।

मैं ने वसन्तराव नायक को फोन किया। वह घर पर थे, मैं ने अपना नाम बतलाया। वह मेरे दोस्त हैं। वह घर पर थे, लेकिन फोन उठाने से इंकार किया। मैं ने पूछा कि कहां मिलेंगे? बोले कि हमें नहीं मालूम कहां मिलेंगे। मैं ने पूछा कब मिलेंगे, तो कहा कि रात में देर से मिलेंगे। मैं ने कहा कि थाना में गड़बड़ी शुरू हो गई है, दंगा शुरू हो गया है, पुलिस का बन्दोबस्त अधूरा है, मैं किस के पास जाऊं? लेकिन वसन्तराव नायक, मुख्य मन्त्री व गृह मन्त्री से मिल नहीं पाया। किसी से भी मिल नहीं पाया। उस दिन से थाना में गड़बड़ी शुरू हो गई और 25 लोगों की मौत थाना शहर में हुई। यह हकीकत है।

इसलिये मैं उस दिन से कह रहा हूं कि बसन्तराव नायक का त्याग-पत्र लिया जाये। मैं जानता हूँ कि चव्हाण साहब अब भी महाराष्ट्र के नेता हैं; उन के दल के मुख्य मन्त्री बने हुए वहां बैठे हैं, लेकिन वह इस को कोई पार्टी का मामला न बनायें। उस दिन जो प्रधान मन्त्री ने कहा था, विशेषकर श्री अटल बिहारी वाजपेयी को जवाब देते हुए, कि बी शेल फाइट, अगर सही मानों में उस में कोई तथ्य है, कोई दम है, तो जरूर आप इस बात को कहें कि वसन्तराव नायक को हट जाना चाहिये। अगर सब से पहले उस भिवण्डी, जलगांव और महाराष्ट्र के हत्याकाण्ड के लिए सब से बड़ा दोषी कोई है तो वह है वसन्तराव नायक। महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री और गृह मन्त्री को एक क्षण के लिये भी उस जगह पर बैठने का कोई अधिकार नहीं है। उन्हें हटाने उस के बाद जो आप परसों सभी लोगों को बुला रहे हैं तो बनाइये योजना, सिर्फ आवाज नहीं, घोषणा नहीं, बनाइये योजना, जिस ठोस कार्यक्रम की मार्फत हिन्दुस्तान से सम्प्रदायवाद को खत्म करने की बात हो, नारेबाजी से नहीं, ठोस कार्यक्रम से। आप का यह मामला चलते-चलते, भिवण्डी की और जलगांव की हत्यायें चलते-चलते 10 तारीख को पूना में उस के निषेध के लिये एक सभा बुलाई गई। उस सभा में क्या कहा गया यह मैं चव्हाण साहब के सामने मराठी में पढ़ूंगा क्योंकि हिन्दी में पढ़ने में मुझे शर्म आयेगी। महाराष्ट्र के अखबारों में उस को छापा गया। उस में कहा गया था कि :

यह शिव सेना के नेता का भाषण है, इस का ट्रांस्लेशन श्री चव्हाण करवा लेंगे क्योंकि उन के पास समय बहुत है :

यह भाषण होता है। अखबार इस को छापते हैं। यह 10 तारीख का किस्सा है। यहां प्रधान मन्त्री बोलती हैं : बी शेल फाइट। फाइट व्हाट? फाइट हाऊ? तब आंख खुलने की बात क्यों? हर जातीय दंगा होने के बाद आंख खुलने की बात बन्द कीजिये!

इस परिस्थिति में कौम को सुधारने के लिए ठोस योजना ले कर आप सदन के सामने और, देश के सामने आएं। यह दो कौमों का झगड़ा नहीं है। यह देश को मिटाने वाला और देश को खत्म करने वाला मामला बनता जा रहा है। खुदा के नाम पर झगड़ा किया जाता है, एक दूसरे को कत्ल किया जाता है। जिन का खुदा में विश्वास है, वे खुदा के वास्ते इसको खत्म करें। यह मेरी आप सभी लोगों से प्रार्थना है।

MR. CHAIRMAN : I have to inform the House that the Home Minister will reply to the Debate at 6 O'clock.

Before that, Shri Atal Bihari Vajpayee will make his submission. Now, I request

hon. Members to make their submissions very briefly so that all the Members and parties who have been left could be given an opportunity to speak. Acharya Kripalani.

SHRI J. B. KRIPALANI (Guna) : Mr. Chairman, Sir, I had no intention of speaking on this issue. But, since this discussion began, I have received a letter from a Muslim belonging to U. P. who has gone and established himself in Maharashtra. And, I would like the House to understand what he writes.

He writes that this quarrel began and was engineered by Shiva Sena. (इंटरप्शंज)

उन्होंने लिखा है कि शिव सेना का जो सिद्धान्त है वह मुसलमानों के बरखिलाफ नहीं है, वह तो सभी जो नान-महाराष्ट्रियन हैं, उनके बरखिलाफ है। यह भी मालूम हुआ है कि पहले जो मारे गए वह मुसलमान नहीं थे, लेकिन हिन्दू थे। पहली बात तो यह है कि इस मामले को ख्वामख्वाह कम्युनल जामा पहनाना सही बात नहीं है। झगड़ा शुरू किसी भी तरफ से हो, इसको आप थोड़ी देर के लिए छोड़ दें। मैं यह इस वास्ते कह रहा हूं कि जन संघ के जो अध्यक्ष हैं वह जरा बेवकूफ हैं। उनको क्या पड़ा था इसमें पड़ने का। यह स्पष्ट पता था कि प्रोसैशन किस ने निकाला। जन संघ ने तो निकाला नहीं था—

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : नहीं।

श्री जी० भा० कृपालानी : तब तुम्हें क्या पड़ा था। यह बेवकूफी है या नहीं है ? जन संघ ने प्रोसैशन नहीं निकाला। प्रोसैशन निकाला शिव सेना ने। और शिव सेना का यह मतलब है कि महाराष्ट्र में नान-महाराष्ट्रियन न रहें। लेकिन एक बात है। तब महाराष्ट्र का कोई और आदमी भी हिन्दुस्तान के दूसरे भागों में न रहे। इस बात को हमारी सरकार को साफ कर देना चाहिए। किसी प्रान्त वाले अगर चाहते हैं कि दूसरे प्रान्त वाले उनके यहां न रहें, उनके सामने यह रखा जाए कि आपके सब आदमी महाराष्ट्र में चले जाएं और हमारे गृह मंत्री भी महाराष्ट्र में चले जायें।

फिर बात यह है कि जब दंगे शुरू हो जाते हैं तो आजकल आप देखें कि atmosphere violence का है। It may take any form. It may take communal form or any form because violence is there.

हम को क्या मालूम है कि कौन-कौन Forces वहां काम कर रही हैं। हम सैंट्रल हाल में बैठे थे। मैं ने कुछ महाराष्ट्रियन भाइयों से कहा कि मुझे यह चिट्ठी आई है कि यह दंगा-फसाद शिव सेना ने शुरू किया। उन्होंने कहा कि दादा, आप ठीक बात कहते हैं, लेकिन इस में तो बहुत सी पार्टीज हैं। मैं ने कहा, "इनक्लूडिंग दि गवर्नमेंट।" इस पर वे हंसने लगे।

The Government is behind the Shiva Sena. It has been stated so often that the police cannot act against Shiv Sena. And all political leaders are afraid of Shiv Sena. And they all encouraged it : Why was this given a communal turn I do not understand even to-day. On the first day those that were killed were all Hindus and not Mussalmans. And then, afterwards, the Hindus killed the Muslims If these quarrels spread you cannot run away from the majority. They would get an upper hand These people suffered. What does the Government say if a riot take place ? Nothing is heard. Only a riot has taken place—so many people are killed. Who started the riot ? Nobody knows. There are enquiries made but the reports do not appear. We do not know what had happened. The whole thing is hush-hush, I say we must find out who threw the match first ? It is very necessary because hatred is there ; violence is there in that atmosphere. But, who threw the match in that combustible powder ? When the community comes to know who threw the match on that powder they themselves will go and tell the people not to throw the match. It is very essential that the communities must know who threw the match. If the match is not thrown, I submit, Sir, the powder cannot blow by itself. It will, after sometime, lose its potency. The persons who throw the match are squarely responsible for the results that follow. They know that it is combustible material. The majority always

[Shri J. B. Kripalani]

takes greater revenge than the occasion requires.

I would, therefore, request all parties to see that nobody throws the match first. Then what happens ? Everybody begins to cry that this is a horrible thing ; our reputation in the world is suffering And then they gather together. Who comes together—those who are at the root of these riots. Their leaders come together and they all say 'Oh, it is horrible. It is just like a thief who cries 'thief, thief' when he joins the persons. Most of them who meet in peace conferences are themselves responsible. Their faces are black. They cannot fight communalism How can they advise others to do this ?

How does peace come about after the riots ? Peace comes about/not because of the conferences as they have not yet met. But, peace comes about because of police action. I want the Home Minister to mark this as to how peace is restored ? In three days' time it was stated that there were no incidents ; or in five days' time it is said that there were no incidents. How did peace come about ? What is that good men gathered together and so hatred between the communities disappeared Did the Peace Councils meet and advise the people to understand their rights and duties ?

No, who brought about peace ? It was the police. It was said that the Chief Minister ordered them to shoot at sight. What was he doing before ? He was informed in the Assembly, as my hon. friend Shri Nath Pai said, he was informed by the press that the atmosphere of violence was there, and he sat still. But later he said 'Shoot at sight'. But why did he not order the police to shoot at sight before the trouble began ?

I have seen that every trouble subsides when Government takes action. It is the Government's responsibility to keep peace and law. What is the good of saying to the people. 'If you do not keep law and order, we cannot do it.' How do they keep it in Maharashtra today ? How do they bring about peace ? What they could do today, could they not do yesterday ? But they go on sleeping ; they go on encouraging disruptive forces. This responsibility squarely lies with the Government. If there is any riot. It is neither the Hindu or the Muslim who are to be blamed. I refuse to believe that a Hindu hates a Muslim or that a Muslim hates a Hindu. It is the mischief-makers who are behind these roots. Then, what happens ? The riot is given a communal colour. But who does the *badmaashi* ? It is the anti-social forces it is the rascals in the locality. And what does the Government do ? It at once shuts up those rascals. Why did they not shut them up earlier ? I say that essentially it is a question of law and order. If the writ of the Government does not run, then anything can happen anywhere ; it is not only communal riots, but it may even be political riots. as are seen in Bengal.

They have introduced President's rule there. Has the situation improved ? Previously, there was a Governor there, by name Shri Dharma Vira ; he was a small little man . I do not know, but I think he does not belong to a martial community ; he did not need four or five advisers, and we heard that within ten days the Naxalites disapperaed in thin air. But, now, what is happening ? They have appointed a Governor who is the stooge of some political party which he wants to bring back. And they cannot tackle the law and order problem now. What was done by the previous Governor in ten days cannot be done by the present Governor in having six or seven advisers.

I say that in all these troubles, Goverument is responsible. Why is it responsible ? It is responsible because it wants to encourage forces which would help its being in power. This is the position from the very beginning, from the earliest days. I can testify to this in the light of what they the Congress did after the first general election and what they have been doing since. This has led to going and coming back of legislators to floor crossing. I squarely blame charge the Congress Government and the Congress Members, whether they are on that side or on this side today ; they are squarely responsible. Who made that man in Kerala, the Governor of Punjab ? Who made Shri Pattom Thanu Pillai Governor ? Who induced that old man of Andhra, Shri T. Prakasam to change sides ? They told him. 'You will be made the Chief Minister of the new State of Andhra, if you join the Congress.' *Yeh chor aadmi hain*, and now they pose as honest people. They have done these evil deeds. They have induced people by Governorships, by Chief Ministerships and other means.

They have stolen ; they have committed robberies ; they have committed kidnappings and such other things—I forget the names. All these names apply to this Government. And I say that there can be no peace in this country, unless the Government reforms its ways, unless it is able to enforce its commands. When can it enforce its commands? It can enforce its commands only when it itself is bound by some rules and regulations and by some laws and procedures. But they think that whenever it serves their purpose, they can do, and violate every rule and every law of decency, and every norm of conduct with impunity and if can not do it in any other way, they say, they are doing it in the name of conscience. These people have a conscience, it is really a wonder; they are such sinners ? I can understand great robbers and vagabonds turning into saints We Can think of Ramayana and Valmiki ; he turned into a saint. Are they Val mikis ? They are simly petty thieves ; small thieves never improve. Big robbers con improve ; There cannot be any change in their life, they cannot lead a new life They have prospered on petty thefts and they will die as petty thieves ; they will never improve, whatever conference they may hold. Because, they are themselves the law-breakers : they break the law and they are in power. As the author of Ramayana Tulsidas says :

समरथ को नहीं दोष गोसाई ।

These persons may commit any number of murders ; yet they will have a following. Why do they have a following ? Because they have power. When that power goes they will be no where and nobody would even look at them.

SHRI NATH PAI : We do not look at them even now.

SHRI J. B. KRIPALANI : We are obliged to look at them. What can we do ? I do not see them because my eye-sight is not good enough to see whether it is the Home Minister or the Prime Minister setting; they are all the same to me. Whenever there is trouble, a committee is appointed. It goes into facts and figures. It is a judicial body. It takes evidence and it weighs evidence. There is cross-examination. Everything is done satisfactorily. Before the completion of the enquiry, I think no party, neither the Government, nor the opposition nor my friends whose heads were broken-yet they do not understand—should say anything. Let the committee decide who were responsible, who throw down the glove and who caused the riots. While there is a judicial enquiry nobody should open his mouth not even myself and I would not have opened it had other hon. Members not done so.

SOME HON. MEMBERS *rose*—

MR. CHAIRMAN : Before I call other hon. Members. I have at least to give the time still left for some parties. Shri Kunte. Before calling on Mr. Kunte I have to make an announcement.

17.40 hrs.

ARREST OF MEMBER

(Shri Ram Gopal Shalwale)

MR. CHAIRMAN : I have to inform the House that the Speaker has received the following communication, dated the 20th May, 1970, from the Sub Divisional Magistrate, New Delhi :—

> "I have the honour to inform you that Shri Ram Gopal Shalwale, Member, Lok Sabha, has been arrested under Section 188, Indian Penal Code, in case F.I.R. No. 991, by the Parliament Street police, today, the 20th May, 1970, at 1.25 P.M , outside the Parliament House near the Irwin Statue, for defiance of the prohibitory orders under Section 144, Criminal Procedure Code.
>
> He is being produced before the Judicial Magistrate, Ist Class. At present he is lodged in Police Station, Parliament Street."

DISCUSSION *RE* : RECENT COMMUNAL DISTURBANCES IN THE COUNTRY—*Contd.*

SHRI DATTATRAYA KUNTE (Kolaba): A few years back I had the occasion to visit the birth place of one of the great educationists, Dr. Karve. It is a village called Murad in North Ratnagiri district.

[Shri Dattatraya Kunte]

There are other Murads famous for other things. But in this particular Murad, I saw something special. For the last 700 years since the village was established by a person who migrated from North India, I think in the 12th or 13th century, all the places of worship are looked after by a village committee.

In the different places of worship, I was shown a place which, according to me, was a masjid. That was also being looked after by the village committee. In the old memorandum drawn up by the old man in the 12th and 13th centuries, the place has been mentioned as Sunyalaya. Like a Devalaya, it is mentioned as Sunyalaya where there is no image. That is also being looked after by the village committee. We have other instances.

We talk of the decline and fall of Hinduism, and the Hindu people in this country since the 8th and 9th century. But we have an illuminating example of the great Shankar Dev and Madhav Dev during the 15th century ; they did such good work in Assam that they were able to bring over the Ahoms, who were not original residents of Assam, to become part and parcel of India and accept the Indian tradition

What did we find on the 14th instant ? Speeches were made trying to explain to us what happened. The hon. Member who opened the debate referred to a particular report submitted by the Home Ministry wherein it was said, according to the report that he gave to us, that out of 23 instances that happened in the past, on 22 occasions certain community, the minority community, took the initiative. He was trying to suggest that the same must have happened at Bhiwandi. That is the impression I carried. The Prime Minister, in righteous indignation, like hurling a stone—said that who throws the first stone is not to be taken into consideration, meaning thereby that there are others who foment this. Well, The Government is now the master from the smallest village to the top. What is the Goverment doing ? Has any attempt been made in this country to create a common community ? A community is supposed to consist of all sorts of religions, communities and castes. Have we that position today ? We are discussing the communal situation in the country and not what happened at Bhiwandi or Jalgaon. It is a matter which is left to Justice Madan. He might find things.

But even then, what is the general situation in this country ? The moment that something happens at Bhiwandi, on the 7th there is retaliation on the 8th instant. As in a cricket match, each community, the so-called communities, try to assess what is its score. Funnily enough, this happens in this country. The Government simply says, do not mention the community. Does the Government's responsibility end there ? Has the Government in this country ever tried to create a good atmosphere ? They have the police ; they have everyting. But what have they done ? They are talking of education, and giving better education and modern education. But what is being done ? Can this Government, or on behelf of its predecessor, claim that an active effort was made to create such an atmosphere ?

In the year 1946, there were such disturbances in Bombay and Ahmedabad. I remember that Mahatma Gandhi asked the then Home Minister of Bombay to go to Ahmedabad in his individual capacity, as a resident of Ahmedabad, and go round the city. What happened ? Was it done ? Is advice a commodity only to be exported ? That is all the question that I would like to ask of this Governmet.

MR. CHAIRMAN : Shri Abdul Ghani Dar.

SOME HON. MEMBERS *rose*—

MR. CHAIRMAN : I have to accommodate parties who have time left.

श्री गुलाम मुहम्मद बख्शी (श्रीनगर) : जनाब, पार्टी का कोई सिलसिला इसमें नहीं है । इब्तदा से लेकर आज तक गलत तरीके से जा रहे हैं । अगर मुसीबत बांटना है तो सबसे ज्यादा मुसीबत इस तरफ है, सबसे ज्यादा इसकी तादाद है । 6 बजे गिलोटीन है । जो ज्यादा ऊंची आवाज से बोलता है उसी को समय मिल जाता है, यही हमने यहां देखा है ।

(شری غلام محمد بخشی - جناب - پارٹی کا کوئی سلسلہ اس میں نہیں ہے۔ ابتدا سے لیکر آج تک غلط طریقے سے چا رہے ہیں۔ اگر مصیبت بانٹنا ہے تو سب سے زیادہ مصیبت اس طرف ہے۔ سب سے زیادہ اس کی تعداد ہے۔ ۶ بجے گلوٹین ہے۔ جو زیادہ اونچی آواز سے بولتا ہے اس کو سمے مل جاتا ہے۔ یہی ہم نے یہاں دیکھا ہے۔)

सभापति महोदय : आपको भी मौका दिया जायेगा ।

श्री अब्दुल गनी डार (गुड़गांव) : सभापति जी, मुझे खुशी है कि बाजपेयी जी ने साफ-साफ फरमाया कि आज मैं बगैर किसी लगी लिपटी के अपने मन की बात कहना चाहता हूं, और मुझे यह भी खुशी है कि प्राइम मिनिस्टर साहिबा ने गुस्से में कहिये या जोश में, उन्होंने भी अपने मन की बात कहने की कोशिश की । और मुझे इस बात की भी खुशी है कि मिस्टर डांगे ने, जिनकी पार्टी मगर मच्छ के आंसू बहाने में काफी माहिर है, उन्होंने अपनी खरी-खरी बातें कहने की कोशिश की । मुझे तीनों का जवाब देते हुए अपनी खरी-खरी बातें कहनी हैं । क्या प्राइम मिनिस्टर साहिबा अपने दामन में मुंह डाल कर देखेंगी कि उनके पिता ने और उन्होंने, जिन्होंने 23 वर्ष में तकरीबन 21 वर्ष हुकूमत की है, उसमें उन्होंने मुसलमानों के दोनों हाथ, दांया भी और बांया भी, क्या फौज और पुलिस में उनके लिए दरवाजे बन्द करके काटे नहीं हैं ? और काटने के बाद वह कहती हैं कि मुसलमान जीयेगा और हम मुकाबला करेंगे । अगर यह सच्चाई है कि उन्होंने और उनके पिता ने मुसलमानों को एक तरह से अपाहिज बनाने के लिए पुलिस और फौज के दरवाजे बन्द किये तो वह जनसंघ ने बन्द नहीं किये । क्या मेरी बहन प्राइम मिनिस्टर अपने दांये बाँये देखेंगी कि कौन मिनिस्टर हैं उनके यहां जिन्होंने अपने सामने उन गरीब तांगे वालों को जो हिन्दू बहन बेटियों को वादी से लेकर जम्मू छोड़ने आये थे उन्हें कत्ल करवाया । राजोरी और पूंच में हजारों बेगुनाह मुसलमान मारे गये । क्या इन्दिरा बहन उनको अपनी मिनिस्ट्री में रखने के बाद भी यह दावा करती हैं कि वह श्री बाजपेयी का मुकाबला करेंगी, वह जनसंघ का मुकाबला करेंगी ? क्या मेरी बहन यह बता सकेंगी, मुझे आचार्य जी से उम्मीद थी कि आज वह कहेंगे, जैसा मैंने कहा था कि, जो कोर्स आप स्कूलों में चला रहे हैं, जो हिस्ट्री स्कूलों में पढ़ा रहे हैं क्या वह मुल्क में एकता लाने वाली हिस्ट्री है ? क्या वह तालीम आज मुल्क में सेक्युलरिज्म की तालीम है ? अगर नहीं है, और आप यहां हुकूमत कर रही हैं तो फिर आप कैसे कहती है कि हम मुकाबला करेंगे ? किसका मुकाबला करेंगे ? क्या बाजपेयी जी के पास, जनसंघ के पास काई फ़ौज है ? और अगर जनसंघ ही कातिल है तो मैं होम मिनिस्टर साहब से...(**व्यवधान**)...। सच बात तो यह है कि तय तो यह हुआ था कि श्री मोरार जी भाई की जगह पर श्री चव्हाण भाई को निकाला जाय । लेकिन कोसिजिन साहब ने कान खींचे कि श्री चव्हाण के निकालने से वह काम नहीं बनेगा, मोरार जी भाई को निकालो ।

मुझे अपनी प्राइम मिनिस्टर साहिबा से यह पूछना है कि क्या वह अपने यहां सेक्रेटेरियट की टेलीफोन डायरेक्ट्री उठा कर, या किसी स्टेट की डायरेक्ट्री उठा कर यह दिखा सकती हैं कि किसी की पोस्ट पर कोई भी मुसलमान है ? आज तक 23 वर्ष में जितने अरब रुपये उन्होंने खर्च किये हैं उसमें किसी मुसलमान को दिखा सकेंगी कि कितना उसको इंडस्ट्री का मौका दिया गया । मैं छोटी सी महाराष्ट्र की बात लेकर के यहां चर्चा नहीं कर रहा हूँ । मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि उत्तर प्रदेश में हिन्दुओं ने मुसलमानों को मोची बनाने की कोशिश की थी और यह पंडित जवाहर लाल और पण्डित जवाहर लाल की बेटी ने मुसलमानों को जलीलतरीन करके यहां रखने का फैसला किया और फिर कहते हैं कि यहां सैकुलरिज्म है । मुसलमानों के साथ 23 वर्ष में क्या-क्या हुआ । क्या यह पहला दंगा है ? यहां दंगों में और जलगांव के दंगे में, खुद होम मिनिस्टर साहब ने अपनी रिपोर्ट दी है, उनमें यह देखें कि आज तक कितने मुसलमान

[श्री अब्दुल गनी डार]

कत्ल हुए । क्या एक भी किसी जनसंघ वाले को मुजरिम ठहराया गया ? अगर नहीं ठहराया गया तो या तो यह है कि जनसंघ वाले मिले हुये हैं इनके साथ और या यह है कि इनमें यह हिम्मत नहीं है कि ये जनसंघ का मुकाबला कर सकें ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : या यह है कि जनसंघ वाले उसमें शामिल नहीं है ।

श्री अब्दुल गनी डार : दूसरी बात जो मैं कहना चाहता हूँ, मैंने इंदिरा बहन से जो कहनी थी, वह यह है कि लागौस में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने यह कहा कि अगर काश्मीर के मुसलमान, कहीं रेफरेंडम हो जाये और वह पाकिस्तान के हक में राय दें तो उनकी हिन्दुस्तान के मुसलमानों की हैसियत नहीं हो जायेगी वह कहने वाले कौन थे ? क्या उन्होंने इस तरह हिन्दुस्तान को आजाद कराया है ? हमने उनसे ज्यादा कुर्बानी दी है । हम उनके भरोसे बोलते हैं कि मुसलमान जो 6 करोड़ कहते हैं—वाजपेयी जी भी सुनें, वह भी सुनें—कि हम अपने वतन के लिए एक-एक खून का कतरा बहा सकते हैं । मुसलमानों ने हमेशा से जो हिन्दू राजाओं के जो नौकर थे, तोपची थे उन्होंने मुसलमान हमलावरों का मुकाबला किया और अपने इस वतन के लिए खून बहाया । मैं कहना चाहता हूं कि आप हमारा ईमान नहीं ले सकते हैं । मुसलमान को यह सन्देह क्या था । दो साथी थे, जो मक्का से चले । दुश्मन कत्ल करने आया । एक साथी की आंख से आंसू बहा । पैगम्बर ने देखा कि मेरा यार है जिसका वह आंसू मेरी रान पर पड़ा है । उसने कहा—लतहजन इन्नलाहा मान—डरते क्यों हो, खुदा हमारे साथ है, सच्चाई हमारे साथ है । बाजपेयी जी हमारा खून कर सकते हैं, लेकिन याद रक्खें बाजपेयी जी, मुसलमानों का इमान नहीं छीन सकते । कोई आज हमको क्यों ताना देता है । जो भाई इस बात का दिमाग में नक्शा जमाये बैठे हैं, उनको खतरा होना चाहिए । याद रखिये, मैं वाजपेयी जी को चौकन्ना करना चाहता हूँ कि अगर मुसलमानों के खिलाफ यहीं रवैया रहा—आज दादा कृपलानी भी नहीं कह पाये कि हिस्ट्री में आप क्या कर रहे हो, क्या पढ़ा रहे हो स्कूलों में—तो यह अच्छा नहीं । मैं तो कहता हूं कि अगर भगवान कृष्ण और राम की जन्मभूमि पर, उनके जन्म-स्थान पर मुसलमानों ने कब्जा किया तो वह गलत था चाहे वह कितने ही बड़े आदमी क्यों न हों और आज भी मुसलमानों को अगर हिन्दू भाई कहें, उनसे मांगे तो वह खुशी से दे देंगे । तो यह बात नहीं है । लेकिन अगर अपने दामन में मुंह डालकर नहीं देखियेगा तो चल्हाण बदनाम हो या नायक बदनाम हो या हितेन देसाई बदनाम हो, किसी को बदनाम करने की कोशिश हो, इससे काम नहीं चलेगा और मुसलमानों को बहकाना चाहेंगे तो वह बहकेगा ।

दूसरी बात वाजपेयी जी से मैं कहना चाहता हूँ कि इन्होंने जिक्र किया मुसलिम जमातों का । मैं मानता हूँ कि जमातें हैं । मुस्लिम लीग है, इत्तहादुल मुस्लिम लीग हैं, मुस्लिम मजलिस है जो सियासत में हिस्सा लेती हैं । लेकिन इस्लामी जमात का नाम सुनकर बहुत हैरान हुआ । सिवाय इसके, कि उनका एक ही काम है कि वह कुरान को, इस्लाम को हिन्दी में छापकर हिन्दुओं को देना चाहते हैं ताकि हिन्दू भाइयों में गलतफहमी कम हो, उनका कोई काम नहीं है । वह चाहते हैं कि हिन्दुओं के सामने इतिहास का पूरा नक्शा आये ।

क्या सभापति जी, यह सच नहीं कि जो सरदार पटेल ने अपने हाथों से हिन्दुस्तान को एक करने के लिए मगरोब और जूनागढ़ के नवाबों को कहा कि तुम कौन हो यह कहने

वाले कि हमारा रिश्ता पाकिस्तान के साथ है। क्या जो काश्मीर का मुसलमान 18 फीसदी था वह नहीं कह सकता था कि तुम कौन हो हिन्दुस्तान वाले, हम पर दावा दिखाने वाले और हम पर कब्जा करने वाले ? हम पाकिस्तान जायेंगे, तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे। लेकिन उन्होंने खुशी से कहा कि हम हिन्दुस्तान के साथ रहना चाहते हैं। बावजूद इसके कि वहाँ हजारों उनके भाई बेगुनाह मारे गये। किस लिए मारे गये, इस पर मैं बहस नहीं नहीं करूंगा। हमारे दादा जी भी यह नहीं कहेंगे कि पहले किसने मारा पीछे किसने मारा। लेकिन सच्चाई यह है कि इस वक्त तक हजारहा मुसलमानों का कत्ल हुआ है और एक भी जनसंघी को फांसी नहीं हुई, इसलिए मैं जनसंघ वालों को मुजरिम नहीं कहता। अगर मुजरिम हैं अटल बिहारी बाजपेयी तो उनको सजा दो, अगर अब्दुल गनी दार मुजरिम है तो उस पर गोली चलाओ। यह बात सिर्फ कहने से नहीं चलेगी।

इस वक्त बाज दोस्त हैं जो हंसते हैं। मैं उनकी हंसी को खूब समझता हूँ। लेकिन क्या यह सच नहीं है कि इस वतन की आजादी के लिये मेरा 44 साला भाई जेल में शहीद हुआ ? क्या यह सच नहीं है कि मेरी लड़की के लिए, जो वतन पर फिदा हुई, गांधी जी ने कफन भेजा ? क्या यह सच नहीं है कि मेरी पहली बीबी वतन के लिये मरी ? क्या यह सच नहीं है कि मैं 13 बार जेल गया ? अगर यह सच है तो मैं आपका साथी हूँ। मैं आज भी इस बुढ़ापे में वतन के लिए जान की कुर्बानी के लिए तैयार हूं, आपके कदमों में खून बहाने के लिये तैयार हूं। अगर मेरे खून से बाजपेयी जी के दिल को ठंडक होती हो और वतन का भला होता हो। मैं बाजपेयी जी से हाथ जोड़ कर कहता हूँ कि उस दिन उन्होंने जो गुस्सा दिखलाया, मुझे डर था कि कहीं उनके उस गुस्से का यह असर न हो कि दिल्ली में आज हजारों मुसलमान शहीद पड़े हों। मैं डर गया था। इसलिए कि मैंने वाजपेयी जी से इस बात की तवक्को नहीं की थी।

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : दिल्ली में झगड़ा नहीं हुआ।

श्री अब्दुल गनी डार : आज इसको कहने से क्या फायदा है, लेकिन बाजपेयी जी के मुंह से कुछ इसी तरह निकल गया था।

डांगे साहब ने कहा कि अगर इन्दिरा जी चाहती हों कि रिऐक्शनरी खत्म हो, कम्यूनलिस्ट्स खत्म हो, तो वह नया एलेक्शन करवायें एक दफा नहीं, दस दफे एलेक्शन कराइये। आप जायेंगे, हम भी जायेंगे। मैंने आप को बारहा गिराया है। डांगे साहब की पार्टी की हमेशा जमानत जब्त हुई है मेरे मुकाबले में। चार दफे उनकी जमानत जब्त हुई है और आज यह हमें डराते हैं ? किस लिए डराते हैं। मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि डांगे साहब आप भी नही, चव्हाण साहब भी नहीं, नायक भी नहीं, यहां जो इजराइल का कौंसुलेट बैठा हुआ है, उसने करोड़ों रुपये खर्च किये हैं और फिर्कापरस्ती को हवा देने की कोशिश की है कि किस तरह से मुसलमानों ने आलम के दिल में जो बिल्कुल अनडेवेलप्ड हैं और हिन्दुस्तान को फारेन एक्स्चेन्ज दे सकते हैं, हिन्दुस्तान का माल खरीद सकते हैं, नफरत पैदा हो और इजराइल के लिए मोहब्बत हो और लोग उनके बहकावे में आ जायें। आपने देखा नहीं मैंने देखा नहीं, दादा ने भी देखा नहीं लेकिन यह सच है कि डांगे सब कुछ जानते हैं, यह सच है कि मि० राममूर्ति सब कुछ जानते हैं, ज्योति बसु सब जानते हैं, यह बात मैं समझता हूँ।

17.57 hrs.

[Mr. Speaker *in the Chair*]

इसलिये मैं बड़े अदब से अर्ज करूंगा कि या तो वह भगवान राम का जज्बा, भगवान कृष्ण का जज्बा, गुरु नानक देव का जज्बा,

[श्री अब्दुल गनी डार]

जो जज्बा चन्द्रगुप्त का था, जो जज्बा अशोक का था, उसको जिन्दा करें, और अगर जिन्दा नहीं कर सकते तो "मेरी बरबादियों पर हंसने वालों, अब इसके बाद तेरा इम्तहान है।" यह जरूरी नहीं है कि 6 करोड़ मुसलमान मिट जायें। हम मिटेंगे नहीं। अगर हमें मिटाना ही है तो फिर पुलिस और फौज के डंडे दिखा कर, पुलिस के हाथ में बन्दूक दे कर, कफ्यूं लगा कर, किसी एक गरीब को कत्ल करने चले जाओ, आग लगाने चले जाओ, यह बहादुरी है ? आओ, मुकाबला करें। मैं मुकाबले से डरता नहीं हूँ। किससे मुकाबला करेंगे ? हम जो नब्बे परसेंट इनकी ही औलाद हैं, इनसे मुकाबला करेंगे ? हम इनकी ही औलाद हैं। ये ही हमारे बाबा हैं। सांपनी अपने बच्चों को खा जाती है। क्या ये भी अपने बच्चों को खायेंगे ? खाने से कुछ क्या बन सकेगा ? कुछ नहीं बनेगा। लेकिन इसका नतीजा क्या होगा ? काश्मीर आपके हाथ से जाएगा। पंजाब आपके हाथ से जाएगा। बंगाल आपके हाथ से जाएगा। दुनियां की कोई ताकत रोक नही सकेगी। अगर यही पालिसी रही और यही फिरकापरस्ती रही तो इसका यही नतीजा होगा। फिरकापरस्ती सरकार करती रही है। जिनके पास हकूमत है, वे करते रहे हैं। लिमये जी के पास, फ़र्नेंडीज जी के पास हकूमत नहीं है। इनके हाथ में रही है और इन्होंने फिरकापरस्ती फैलाई है। इंदिरा बहन अपने ईमान को टटोलें। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तो उनको याद रखना चाहिए कि दुनिया में बड़े-बड़े और शक्तिमान राजा आए लेकिन उनकी शक्ति खुदा ने टुकड़े-टुकड़े कर दी। हम आपकी औलाद हैं, हम देश के प्रति वफादार हैं, हम पर गद्दारी का कोई धब्बा नहीं हैं। अगर धब्बा किसी पर है तो हिन्दुओं पर है, सिखों पर है, हम पर नहीं है। अगर फिर भी हम पर आप भरोसा नहीं करते तो कर लो जो आप चाहें। आप हमें निकाल भी नहीं सकते। हम निकलें भी क्यों ? हमारे बाप दादों के मंदिर यहां हैं, गिरजे यहां हैं मस्जिदें यहां हैं, गुरुद्वारे यहां हैं। हमें आप निकालोगे ? कब्रिस्तान की बात छोड़ो। हम मिटेंगे तो तुम भी मिटोगे। यह नहीं हो सकता है कि कोई हमें डराये। हम डरते नहीं हैं। मौत का मुकाबला मैंने हमेशा किया है। मौत के साथ मैं हमेशा खेला हूं...(इंटरप्शंस)...बनर्जी साहब यह मुझ में ही हिम्मत है कि मै इधर बैठा हूं। जो कमजोर हैं उनके साथ हूँ। जिन्होंने मुझे बारह साल के लिए निकाला था, उनके साथ हूँ।

नशा पिला कर गिराना तो सभी को आता है
मजा तो जब है कि गिरतों को थामे साकी।

मुझे इधर आने से कुछ मिलने वाला नही है। लेकिन फिर भी मैं इधर रहूंगा। ये कम्युनिस्ट कब तक इस सरकार को सभालेंग ? सम्भालेंगे तो हम सम्भालेंगे जिनके मन में देश का हित सबसे पहले है। मोरार जी हों या लिमये जी हों या रामसुभग सिंह जी हों, कोई भी हो, वही सम्भालेगा जिसके दिल में वतन के वास्ते दर्द है। आपके दिल में नहीं है।

18.00 hrs.

मै बाजपेयी जी को याद दिलाना चाहता हूं कि दो मांएं एक बच्चे पर अपना-अपना अधिकार जमा रही थीं। एक ने कहा कि इसके दो टुकड़े करके इसको दोनों में बांट दिया जाए। लेकिन जो असली मां थी उसने कहा कि बच्चा दूसरी को दे दिया जाये लेकिन इसके टुकड़े न किये जायें। हम भी वक्त आने पर देश पर मर मिटने वाले हैं। हम मुल्क को छोड़ कर जाने वाले नहीं है। हम भागने वाले नहीं हैं।

अगर हालत बिगड़ती गई तों याद रखें कि सिख स्टेट बनेगी, बंगाल एक होगा

ग्रौर वहां एक नई हुकूमत बनेगी, काश्मीर दोनों मिल कर एक इस्लामी स्टेट बनेगी और इस सबकी जिम्मेदारी इंदिरा सरकार पर होगी किसी दूसरे पर नहीं होगी ।

شری عبدالغنی ڈار (گوڑگانوہ)- سبھاپتی جی مجھے جو خوشی ہے کہ واجپئی جی نے صاف صاف فرمایا کہ آج میں بغیر کسی ٹولیشن کے اپنے من کی بات کہنا چاہتا ہوں اور مجھے یہ بھی خوشی ہے کہ پرائم منسٹر صاحبہ نے غصہ میں کہئے یا جوش میں کچھ انھوں نے بھی اپنے من کی بات کہنے کی کوشش کی - اور مجھے اس بات کی بھی خوشی ہے کہ مسٹر ڈانگے نے جن کی پارٹی مگرمچھ کے آنسو بہانے میں کافی ماہر ہے انھوں نے اپنی کھری کھری باتیں کہنے کی کوشش کی۔ مجھے تینوں کا جواب دیتے ہوئے اپنی کھری کھری باتیں کہنی ہیں۔ کیا پرائم منسٹر صاحبہ اپنے دامن میں منہ ڈالکر دیکھیں کہ ان کے پٹھانے اور انھوں نے جنہوں نے ۲۲ برس میں تقریباً ۲۱ برس جو حکومت کی ہے اس میں انھوں نے مسلمانوں کے دونوں ہاتھ دایاں بھی اور بایاں بھی کیا فوج اور پولیس میں ان کے لئے دروازے بند کرکے کاٹے نہیں ہیں اور کاٹنے کے بعد وہ کہتی ہیں کہ مسلمان جنیگا اور ہم مقابلہ کریں گے اگر یہ سچائی ہے تو انھوں نے اور ان کے بنائے مسلمانوں کو ایک طرح سے اپاہج بنانے کے لئے پولیس اور فوج کے دروازے بند کئے۔ موجودہ جن سنگھ نے بند نہیں کئے۔ کیا پرائم منسٹر اپنے دائیں بائیں دیکھیں گی کہ کون منسٹر ہیں ان کے یہاں جنہوں نے اپنے سامنے ان غریب ٹانگے والوں کو جو ہندو بہن بیٹیوں کو وادی سے لیکر جموں چھوڑ آتے تھے انھیں قتل کروایا - راجوری اور پونچھ میں ہزاروں بےگناہ مارے گئے - کیا اندرا بھی ان کو اپنی منسٹری میں رکھنے کے بعد بھی یہ دعوی کرتی ہیں کہ وہ شری واجپئی کا مقابلہ کریں گی۔ جن سنگھ کا مقابلہ کریں گی -

کیا میری بہن یہ بتا سکیں گی کہ کورس آپ اسکولوں میں چلا رہے ہیں یا جو تواریخ پڑھا رہے ہیں وہ ملک میں ایکتا لانے والی تواریخ ہے۔ کیا وہ تعلیم آج ملک میں سیکولرازم کی تعلیم ہے - اگر نہیں ہے اور آپ یہاں حکومت کر رہی ہیں تو پھر آپ کیسے کہتی ہیں کہ ہم مقابلہ کریں گے کس کا مقابلہ کریں گے کیا واجپئی جی یا جن سنگھ کے پاس کوئی فوج ہے۔ اور اگر جن سنگھ ہی قاتل ہے تو میں ہوم منسٹر صاحب سے - ویودھان - سچ بات تو یہ ہے کہ طے تو یہ ہوا تھا کہ شری مرارجی بھائی کی جگہ پر شری چوہان بھائی کو نکالا جائے لیکن کو سیگن صاحب نے کان کھینچے کہ شری چوہان کے نکالنے سے وہ کام نہیں بنیگا - مرارجی بھائی کو نکالو۔

مجھے اپنی پرائم منسٹر صاحبہ سے یہ پوچھنا ہے کہ کیا وہ اپنے یہاں سکریٹریٹ کی یا کسی اسٹیٹ کی ڈائریکٹری اٹھا کر یہ دکھا سکتی ہیں کہ کسی کی پوسٹ پر کوئی بھی مسلمان ہے - آج تک ۲۳ سال میں جتنے ارب روپے آپ نے خرچ کئے ہیں اس میں کیا آپ بتا سکیں گی کہ کسی مسلمان کو کوئی انڈسٹری کا موقع دیا گیا۔ میں چھوٹی سی مہاراشٹر کی بات لیکر کے یہاں چرچا نہیں کر رہا ہوں - میں آپ کو بتلانا چاہتا ہوں کہ اتر پردیش میں ہندوؤں نے مسلمانوں کو سوچی بنانے کی کوشش کی تھی اور پنڈت جواہر لال نہرو اور پنڈت جواہر لال کی بیٹی نے مسلمانوں کو ذلیل ترین کرکے یہاں رکھنے کا فیصلہ کیا اور پھر کہتے ہیں کہ یہاں سیکولرازم ہے مسلمانوں کے ساتھ ۲۳ برس میں کیا کیا ہوا کیا یہ بھلا دینا ہے - یہاں دنگوں میں اور جلگاؤں کے دنگے میں خود ہوم منسٹر صاحب نے اپنی رپورٹیں دی ہیں ان میں وہ دیکھیں کہ آج تک کتنے مسلمان قتل ہوئے۔ کیا ایک بھی کسی جن سنگھ والے کو مجرم ٹھہرایا گیا - اگر نہیں ٹھہرایا گیا تو یا تو یہ ہے کہ جن سنگھ والے ملے ہوئے ہیں ان کے ساتھ اور یا یہ ہے کہ ان میں یہ ہمت نہیں ہے کہ یہ جن سنگھ کا مقابلہ کر سکیں -

شری اٹل بہاری واجپئی - یا یہ ہے کہ جن سنگھ والے اس میں شامل نہیں ہیں -

شری عبدالغنی ڈار - دوسری بات جو میں کہنا چاہتا ہوں اور میں نے اندرا بہن سے جو کہی تھی وہ یہ ہے کہ لائوس میں پنڈت جواہر لال نہرو نے یہ کہا کہ اگر کشمیر کے مسلمان کہیں" فرینڈم ہو جائے اور وہ پاکستان کے حق میں رائے دیں" تو ان کی ہندوستان کے مسلمانوں کی حیثیت نہیں ہو جائیگی - وہ کہنے والے کون تھے۔ کیا انھوں نے اس طرح ہندوستان کو آزاد کرایا ہے - ہم نے ان سے زیادہ قربانی دی ہے ہم ان کے بھروسے بولتے ہیں کہ مسلمان جو چھ کروڑ کہتے ہیں - واجپئی جی سنیں اور وہ بھی سنیں کہ ہم اپنے وطن کے لئے ایک ایک خون کا قطرہ بہا سکتے ہیں - مسلمانوں نے ہمیشہ جو ہندو راجاؤں کے نوکر تھے تو بھی تھے انھوں نے مسلمان حملہ آوروں کا مقابلہ کیا اور اپنے اس وطن کے لئے ایک ایک خون کا قطرہ بہا سکتے ہیں۔ مسلمانوں نے ہمیشہ جو ہندو راجاؤں کے نوکر تھے تو بھی تھے انھوں نے مسلمان حملہ آوروں کا مقابلہ کیا اور اپنے اس وطن کے لئے خون بہایا۔ میں کہنا چاہتا ہوں کہ آپ ہمارا ایمان نہیں لے سکتے ہیں۔ مسلمان کو یہ سندیہ کیوں تھا - دو ساتھی تھے جو مکہ سے چلے - دشمن قتل کرنے آیا - ایک ساتھی کی آنکھ سے آنسو بہا پیغمبر نے دیکھا کہ میرا یار رہے جب کا وہ آنسو میری ران پر پڑا ہے۔ اس سے کہا۔ ڈرتے کیوں ہو - خدا ہمارے ساتھ ہے۔ سچائی ہمارے ساتھ ہے۔ واجپئی جی ہمارا خون کر سکتے ہیں لیکن یاد رکھیں۔ واجپئی جی مسلمانوں کا ایمان نہیں چھین سکتے۔ کوئی آج ہم کو کیوں تانا دیتا ہے۔ جو بھائی اس بات کا دماغ میں نقشہ بنائے بیٹھے ہیں ان کو خطرہ ہونا چاہئے۔ یاد رکھئے میں واجپئی جی کو چیلنج کرنا چاہتا ہوں کہ اگر مسلمانوں کے خلاف یہی رویہ رہا۔ آج دادا کرپلانی بھی نہیں کہ - بائے کہ ہم شری میں آپ کیا کر رہے ہو۔ کیا پڑھا رہے ہو اسکولوں میں۔ تو یہ اچھا نہیں۔ میں تو کہتا ہوں کہ اگر بھگوان کرشن اور رام کی جنم بھومی پر ان کے جنم استھان پر مسلمانوں نے قبضہ کیا تو وہ غلط تھا چاہے وہ کتنے ہی بڑے آدمی کیوں نہ ہوں اور آج بھی مسلمانوں کو اگر ہندو بھائی کہیں ان سے مانگیں تو وہ خوشی سے دے دیں گے۔ تو یہ بات نہیں ہے لیکن اگر اپنے دامن میں منہ ڈالکر نہیں دیکھئے گا تو چوہان بدنام ہو یا تایکہ بدنام ہو یا ہتیندر دیسائی بدنام ہو کسی کو بدنام کرنے کی کوشش ہو اس سے کام نہیں چلے گا اور مسلمانوں کو بہکانا چاہیں گے وہ بہکیں گے -

دوسری بات واجپئی جی سے میں کہنا چاہتا ہوں کہ انھوں نے ذکر کیا مسلم جماعتوں کا۔ میں مانتا ہوں کہ جماعتیں ہیں۔ مسلم لیگ ہے اتحاد آل مسلم لیگ ہے۔ مسلم مجلس ہے۔ یہ سیاست میں حصہ لیتی ہے - لیکن اسلامی جماعت کا نام سنکر میں بہت حیران ہوا۔ سوا اس کے کہ ان کا صرف ایک ہی کام ہے کہ وہ قرآن کو اسلام کو ہندی میں چھاپ کر ہندوؤں کو دینا چاہتے ہیں تاکہ ہندو بھائیوں میں غلط فہمیاں کم ہوں۔ ان کا کوئی اور کام نہیں ہے۔ وہ چاہتے ہیں کہ ہندوؤں کے سامنے اتہاس کا پورا نقشہ آئے -

کیا سجھاتی جی یہ سچ نہیں کہ جو سردار پٹیل نے اپنے مضبوط ہاتھوں سے ہندوستان کو ایک کرنے کے لئے گجرات اور جوناگڑھ کے نوابوں کو کہا کہ تم کون ہو یہ کہنے والے کہ ہمارا رشتہ پاکستان کے ساتھ ہے۔

کیا جو کشمیر کا مسلمان ۸۰ فی صدی تھا وہ نہیں کہہ سکتا تھا کہ تم کون ہو ہندوستان والے ہم پر دعوی دکھانے والے اور ہم پر قبضہ کرنے والے۔ ہم پاکستان جائیں گے۔ تمہارے ساتھ نہیں رہیں گے۔ لیکن انھوں نے خوشی سے کہا کہ ہم ہندوستان کے ساتھ رہنا چاہتے ہیں۔ باوجود اس کے کہ وہاں ہزاروں ان کے بھائی بے گناہ مارے گئے۔ اس پر میں نہیں بحث کروں گا۔ ہمارے دادا جی بھی یہ نہیں کہیں گے کہ پہلے کس نے مارا پیچھے کس نے مارا۔ لیکن سچائی یہ ہے کہ اس وقت تک ہزاروں مسلمانوں کا قتل ہوا ہے اور ایک جن سنگھی کو پھانسی نہیں ہوئی۔ اس لئے میں جن سنگھ والوں کو مجرم نہیں کہتا۔ اگر مجرم ہیں اٹل بہاری واجپئی تو ان کو سزا دو۔ اگر عبدالغنی ڈار مجرم ہے تو اس پر گولی چلاؤ۔ یہ بات صرف کہنے سے نہیں ہوگی۔

اس وقت بعض دوست جو ہنستے ہیں۔ میں ان کی ہنسی کو خوب سمجھتا ہوں۔ لیکن کیا یہ سچ نہیں ہے کہ اس وطن کی آزادی کے لئے میرا ۴۰ سالہ بھائی جیل میں شہید ہوا۔ کیا یہ سچ نہیں ہے کہ میری لڑکی کے لئے جو وطن پر فدا ہوئی۔ گاندھی جی نے کفن بھیجا۔ کیا یہ سچ نہیں ہے کہ میں ۱۴ بار جیل گیا۔ اگر یہ سچ ہے تو میں آپ کا ساتھی ہوں۔ میں آج بھی اس بڑھاپے میں وطن کے لئے جان کی قربانی کے لئے تیار ہوں۔ آپ کے قدموں میں خون بہانے کے لئے تیار ہوں۔ اگر میرے خون سے واجپئی جی کے دل کو ٹھنڈک ہوتی ہو اور وطن کا بھلا ہوتا ہو۔ میں واجپئی جی سے ہاتھ جوڑ کر کہتا ہوں کہ اس دن انھوں نے جو غصہ دکھلایا مجھے ڈر تھا کہ کہیں ان کے اس غصہ کا یہ اثر نہ ہو کہ دہلی میں آج ہزاروں مسلمان شہید پڑے ہوں۔ میں ڈر گیا تھا اس لئے کہ کل میں نے واجپئی جی سے اس بات کی توقع نہیں کی تھی۔

واجپئی جی سے اس بات کی توقع نہیں کی تھی۔

شری کنور لال گپتا - دہلی میں جھگڑا نہیں ہوا۔

شری عبدالغنی ڈار - آج اس کو کہنے سے کیا فائدہ ہے لیکن واجپئی جی کے منہ سے کچھ اس طرح نکل گیا تھا۔

ڈانگے صاحب نے کہا کہ اگر اندرا جی چاہتی ہوں کہ ریکشنری ختم ہوں۔ کوشش ختم ہوں، تو وہ نیا الیکشن کروائیں۔ ایک دفعہ نہیں۔ دس دفعہ الیکشن کروائے۔ آپ جائیں گے ہم بھی جائیں گے۔ میں نے آپ کو بارہا گرایا ہے۔ ڈانگے صاحب کی پارٹی کی ہمیشہ ضمانت ضبط ہوئی ہے میرے مقابلہ میں۔ چار دفعہ ان کی ضمانت ضبط ہوئی ہے اور آج ہمیں یہ ڈراتے ہیں۔ کس لئے ڈراتے ہیں۔ میں ان سے کہنا چاہتا ہوں کہ ڈانگے صاحب آپ بھی نہیں۔ چوان صاحب بھی نہیں۔ نانک بھی نہیں۔ یہاں جو

عزرائیل کا کونسولیٹ بیٹھا ہوا ہے۔ اس نے کروڑوں روپے خرچ کئے ہیں اور فرقہ پرستی کو ہوا دینے کی کوشش کی ہے کہ کس طرح سے مسلمانان عالم کے دل میں جو بالکل انڈو ملیٹیڈ ہیں اور ہندوستان کو غاریں ایکسچینج دے سکتے ہیں ہندوستان کا مال خرید سکتے ہیں۔ نفرت پیدا ہو اور عزرائیل کے لئے محبت ہو اور لوگ ان کے بہکاوے میں آجاویں۔ آپ نے دیکھا نہیں۔ میں نے دیکھا نہیں دادا نے بھی دیکھا نہیں۔ لیکن یہ سچ ہے کہ ڈانگے صاحب سب کچھ جانتے ہیں۔ یہ سچ ہے کہ مسٹر رام مورتی سب کچھ جانتے ہیں۔ جیوتی بسو سب جانتے ہیں یہ بات میں سمجھتا ہوں۔

اس لئے میں بڑے ادب سے عرض کروں گا کہ یا تو وہ بھگوان رام کا جذبہ بھگوان کرشن کا جذبہ۔ گورو نانک دیو کا جذبہ۔ جو جذبہ چندر گپت کا تھا۔ جو جذبہ اشوک کا تھا اس کو زندہ کریں۔ اور اگر زندہ نہیں کر سکتے تو میری بربادیوں پر ہنسنے والو۔ اب اس کے بعد تیرا امتحان ہے۔ یہ ضروری نہیں ہے کہ ۶ کروڑ مسلمان مٹ جائیں۔ ہم مٹینگے نہیں۔ اگر ہمیں مٹانا ہی ہے تو پھر پولیس اور فوج کے ڈنڈے دکھا کر پولیس کے ہاتھ میں بندوق دے کر۔ کرفیو لگا کر۔ کسی ایک غریب کو قتل کرنے چلے جاؤ۔ آگ لگانے چلے جاؤ۔ یہ بہادری ہے۔ آؤ مقابلہ کریں۔ میں مقابلہ سے ڈرتا نہیں ہوں۔ کس سے مقابلہ کریں گے۔ ہم ۹۰ پرسنٹ ان کی ہی اولاد ہیں۔ ان سے مقابلہ کریں گے ہم ان کی ہی اولاد ہیں۔ یہ ہی ہمارے بابا ہیں۔ سانپنی اپنے بچوں کو کھا جاتی ہے کیا یہ بھی اپنے بچوں کو کھائیں گے۔ کھانے سے کچھ کیا بن سکے گا۔ کچھ نہیں بنیگا لیکن اس کا نتیجہ کیا ہوگا۔ کشمیر آپ کے ہاتھ سے جائیگا۔ پنجاب آپ کے ہاتھ سے جائیگا۔ دنیا کی کوئی طاقت روک نہیں سکے گی۔ اگر یہی پالیسی رہی اور یہی فرقہ پرستی رہی تو ان کا یہی نتیجہ ہوگا۔ فرقہ پرستی سرکار کر رہی ہے جن کے پاس حکومت ہے وہ کرتے رہے ہیں۔ لمئے جی کے پاس۔ فرینڈیس جی کے پاس حکومت نہیں ہے۔ ان کے ہاتھ میں رہی ہے اور انھوں نے فرقہ پرستی پھیلائی ہے۔ اندرا جی اپنے ایمان کو ٹٹولیں۔ اگر انھوں نے ایسا نہیں کیا تو ان کو یاد رکھنا چاہیے کہ دنیا میں بڑے بڑے اور شکتیمان راجا آئے لیکن ان کی شکتی خدا نے ٹکڑے ٹکڑے کر دی۔ ہم آپ کی اولاد ہیں۔ ہم دیش کے پرتی وفادار ہیں

ہم پر غداری کا کوئی دھبا نہیں ہے۔ اگر دھبا کسی پر ہے تو ہندوؤں پر ہے۔ سکھوں پر ہے۔ ہم پر نہیں ہے۔ اگر پھر بھی ہم پر آپ بھروسہ نہیں کرتے تو کر لو جو آپ چاہیں۔ آپ ہمیں نکال بھی نہیں سکتے۔ ہم نکلیں بھی کیوں۔ ہمارے باپ دادوں کے مندر یہاں ہیں۔ گرجے یہاں ہیں مسجدیں یہاں ہیں۔ گوردوارے یہاں ہیں۔ ہمیں آپ نکالیں گے۔ قبرستان کی بات چھوڑو۔ ہم مٹیں گے تو تم بھی مٹو گے۔ یہ نہیں ہو سکتا ہے کہ کوئی ہمیں ڈرائے۔ ہم ڈرتے نہیں ہیں۔ موت کا مقابلہ میں نے ہمیشہ کیا ہے۔ موت کے ساتھ میں ہمیشہ کھیلا ہوں (انٹرپشنز) بنرجی صاحب یہ مجھ میں ہی ہمت ہے کہ میں ادھر بیٹھا ہوں۔ ۶۔ کروڑ ہیں ان کے ساتھ ہوں جنہوں نے مجھے بارہ سال کے لئے نکالا تھا ان کے ساتھ ہوں۔

نشہ پلا کر گرانا تو سبھی کو آتا ہے
مزہ تو جب ہے کہ گرتوں کو تھامے ساقی

مجھے ادھر آنے سے کچھ ملنے والا نہیں ہے لیکن پھر بھی میں ادھر رہونگا۔ یہ کمیونسٹ سب ملک اس سرکار کو سنبھالیں گے۔ سنبھالیں گے تو ہم سنبھالیں گے۔ جن کے من میں دیش کا ہت سب سے پہلے ہے۔ مرار جی ہوں۔ بانلے جی ہوں یا رام سبھگ سنگھ ہوں کوئی بھی ہو۔ وہی سنبھالے گا جس کے دل میں وطن کے واسطے درد ہے۔ آپ کے دل میں نہیں ہے۔

میں واجپئی جی کو یاد دلانا چاہتا ہوں کہ دو مائیں ایک بچے پر اپنا اپنا ادھیکار جتا رہی تھیں۔ ایک نے کہا کہ اس کے دو ٹکڑے کر کے اس کو دونوں میں بانٹ دیا جائے۔ لیکن جو اصلی ماں تھی اس نے کہا کہ بچہ دوسری کو دے دیا جائے لیکن اس کے ٹکڑے نہ کئے جائیں۔ ہم بھی وقت آنے پر دیش پر مرمٹنے والے ہیں۔ ہم ملک کو چھوڑ کر جانے والے نہیں ہیں۔ ہم بھاگنے والے نہیں ہیں۔

اگر حالت بگڑتی گئی تو یاد رکھیں کہ سکھ سٹیٹ بنے گی۔ بنگال ایک ہوگا اور وہاں ایک نئی حکومت بنے گی۔ کشمیر دونوں مل کر ایک اسلامی سٹیٹ بنے گی اور اس سب کی ذمہ داری اندرا سرکار پر ہوگی۔ کسی دوسرے پر نہیں ہوگی۔]

SHRI AHMAD AGA (Baramulla) : Mr Speaker, Sir, I am not one of those persons who would say that a particular State Government or the authorities who have failed to prevent the occurrence of such disturbance should not be taken to task. They should certainly be taken to task because, I think, it is possible to prevent or crush the occurrence of such things if they start. But I would like to have a different approach to the problem at the moment.

I heard Shri Vajpayee. I have also heard the Prime Minister of India who expressed indignation of the Indian nation with regard to this. I want to make it very plain that India today does not live in isolation. Perhaps it might have been possible to live in isolation a few centuries ago, but in the present day India lives in the comity of nations. It, certainly, does not do good to our honour or to our nation if such things happen. Therefore it would be wrong if I attempt to throw blame on him or he attempts to throw blame on me. But in the eyes of the world community we are not doing credit to our nation if people say outside in India, such things are still happening.

On that day, when the Prime Minister intervened in the debate, she restored confidence amongst the minorities, whether they are Muslims, Sikhs or Christians. She said that different communities live in majority in different regions. Now, I belong to a region where Muslims are in a majority In response to her call I say, on behalf of Kashmiri Muslims—I am not talking as a Member of the ruling party ; I am talking member of Kashmiri Muslims—that we shall protect the minorities there. We have been doing it in the past Not only because we have that tradition, we have that past, but also because all political parties in the valley of Kashmir do believe in secularism. I must mention Sheikh Mohamed Abdullah who was secular, is secular and is going to be secular I may have a difference of opinion with him. But that may be so far as politics is concerned...

SHRI SHEO NARAIN (Basti) : You make him the Chief Minister of Kashmir.

SHRI AHMAD AGA : You sit down ; I am not yielding. The whole point is that Kashmiri people, as a class of people, have been secular and shall remain as secular. We have that tradition there.

I am reminded that there was one Lulla Arifa. Both Hindus and Muslims believed in her. Muslims thought she was a Muslim. Hindus called her Lulla Ishwari. They thought she was a Hindu. The fact is she was born in a Hindu family. From her, Nuruddin Wali, a Muslim saint, drew inspiration.

Then, I am reminded also of one Anand Ram. He wrote poetry in praise of the Prophet of Islam. I know also there was Shah Gafoor who was a Muslim saint who said : Go in search of Brahma, Vishnu and Mahesh. So, that is the secular character we have in Kashmir. The Muslim saints talk of Hindu gods and the Hindu saints talk of the Prophet of Islam. We have lived together.

Not that alone. In the earlier history, there was one Qutabuddin King who asked Hindus to do *havan* because there was a famine there. So, I can with full responsibility say that we are secular in Kashmir and we can protect the minorities there.

Now, I will not comment on what Mr. Vajpayee said. But I will say what he did not say. When I heard Mr. Vajpayee, and I also heard Mrs. Indira Gandhi, my first reaction was :

कांटों की जुबान और है और फूलों की जुबान और।

I felt that it thorns of disunity that Shri Vajpayee was spreading in this country. He metioned three things. He said that Muslims belong to three categories. One that category of Muslims who are disloyal ; the other that category of Muslims who incite trouble and the third category of Muslims who are with *katmullas*. I want to remind him why he did not mention that when the Congress leaders went into jail, it was the Hindu Mahasabha and the Muslim League who joined the Viceroy's Council and that *Shudhi* and *Tableeg* movements got an impetus. Why did he not say that it was that which ultimately resulted into the partition of India and martyrdom of Gandhiji ? He did not mention that. He did not mention that the Hindu Mahasabha and the Muslim League joined the Viceroy's Executive Council when the Congress were inside the jail : He had completely for gotten Rafi Ahmed Kidwai, Maulana Azad, Mohd Ali, Shaukat Ali, Dr. Ansari and others who fought for the freedom of India. He completely for got them.

MR. SPEAKER : Please conclude now.

SHRI AHMAD AGA : Skies will not fall if I continue for a minute more and the Minister's reply gets delayed by a few minutes.

He forgets completely that Brig Osman laid his life for the country. He forgot completely Master Abdual Aziz who laid his life for the country. He forgets completely Sherwani who was crucified. It was Choodhary Mohd Deen who gave information of the infiltrators coming into the valley in 1965. He did not make a mention of all this. All this he forgets and I am reminded of :

हमने जाना था संगे दर क्या है ।
तुम न समझे जब भी वह सर क्या है ।

The whole point is that the trouble started with Shivaji Jayanti. Now it is forgotton completly and Mr. Vajpayee also has forgotten. There was no quarrel between Hindus and Muslims The Commader in Chief of Aurangazeb was Raja Jai Singh and Shivaji was himself a Commander and his greatness lay in the fact that he was the first man in 800 years who rose against the autocratic regime of the Moghul expansionism. In his army there were Muslim commanders He did not make a mention of that He did not also mention that it was Akbar who annexed Kashmir and put Yusuf Shah Chak in Jail at Patna. It was Aurangazeb who massacred his own brother, Dara Shukah and annexed Golconda and Bijapur which were Muslim kingdoms. It was not certainly a quarrel between Hindus and Muslims. If you look at history that way, it would mean deceiving our younger generation.

My whole point is that India suffered always because we were not united. This is what is happening. These are divisive forces. If the British could stay here, it was because we were divided. If Mohd. Ghori could come here, it was again because of our disunity What is happening in this world to-day ? The American imperialism is spreading its tentacles in South East Asia and in West Asia and if we remain divided, we will suffer. They have set up puppet governments in the same way as British had then set up these in India. Are we going to have this disunity and divisive forces to day or shall we remain united ? I will conclude by saying...

जुस्तजू की हो तड़प दिल में तो मुश्किल क्या है ।
रास्ते बन्द नहीं हैं ढूंढने वालों के लिए ।।

अध्यक्ष महोदय : आप कुछ चेयर की बात भी मानियेगा या कापी की बात ही मानते रहियेगा । अब आप खत्म करिये ।

श्री अहमद आगा : मैं आपकी बात मानता हूँ ।

श्री गुलाम मुहम्मद बख्शी (श्रीनगर): जनाबे सदर, मौअज्जिज बिरादरान-पार्लियामेंट, आज कई दिनों से कई दोस्त हिन्दुस्तान में फिरकेदारी के नाम पर जो कुछ हो रहा हैं, उसके मुताल्लिक अपने अपने ख्यालात का इजहार कर चुके हैं । मेरा रुए-सुखन किसी की तरफ नहीं है—न हुकूमत की तरफ है न वाजपेयी जी की तरफ है और न किसी की तरफ है । मेरा रूए-सुखन मेरी अपनी तरफ है और वह इसलिए कि आजादी के बाद यानी पिछले 22 सालों में यह 321वां फिसाद इस मुल्क में हुआ है । चूंकि मेरे पास वक्त नहीं है, मैं उन तमाम फैक्ट्स एण्ड फिगर्स को इस ऐवान के सामने रखूं कि आजादी के बाद जबकि हमको अपनी गर्दन ऊंची रखनी चाहिए थी—जब हमने हिन्दुस्तान की जो आजादी लड़ी थी, तब हम सब एक थे, लेकिन आजादी हासिल करने के बाद हिन्दुस्तानियों को हम भूल गये, इन्फरादियत हममें आ गई और आज हम एक दूसरे का गला काट रहे है ।

मैंने कहा—पिछले 22 सालों में यह 321वां फिसाद है यानी पूरा एक साल हमने फिरकेदाराना फिसाद में ले लिया, उसमें छोटे फिसाद भी हुए और बड़े फिसाद भी हुए, रांची जमशेदपुर, नागपुर, जबलपुर, भिवांसा, अहमदाबाद और अब महाराष्ट्र भी उसमें

शामिल हो गया। ये चार-चांद हम किस को लगा रहे हैं ? मैं किस को एक्यूज करूं, क्या चव्हाण साहब को एक्यूज करूं ? ईमानदारी से मैं समझता हूं कि हम सबके सब मेम्बर पार्लियामेंट, एन्टायर-लीडरशिप आफ दी कन्ट्री, चाहे कोई किसी भी जमायत में हो, मुजरिम के तौर पर इस कटहरे में खड़े हैं, क्योंकि हम फेल हुए हैं. मिजरेबली फेल हुए हैं। मैं किसको इलजाम दूं ? किसने पहल की, किसने पहल नहीं की ? मैं चव्हाण साहब से पूछना चाहता हूं—आज आपके हाथ में इकतदार है, 22 सालों से आपके हाथ में इकतदार रहा है अगर चोर चोरी करे, भाई भाई का कत्ल करे जमीन की बिना पर या किसी और बिना पर, उसको गिरफ्तार किया जाता है और फांसी पर लटकाया जाता है। मैं निहायत अदब के साथ पूछना चाहता हूं यह 321वां फिसाद हुआ, क्या आप अपने जवाब में बतला सकते हैं कि हिन्दुस्तान के कितने लोगों को जिन्होंने इन दंगे-फिसादों में हिस्सा लिया, जिन्होंने कत्लो-गारत से काम लिया, जिन्होंने बहू-बेटियों की असमतदरी की, जिन्होंने लाखों इन्सानों को बेघर और बेदर कर दिया—चाहे हिन्दू हो या मुसलमान हो—फांसी पर लटकाया गया ? आज हमारा सिर नदामत से झुक रहा है, शरमिन्दगी से झुक रहा है कि हम सीना तानकर यह नहीं कह सकते कि हम हिन्दुस्तानी हैं, हालांकि 22 सालों के बाद हमारी यह हालत होनी चाहिए थी कि हम गरदन ऊंची रखते। आगा साहब और दूसरे दोस्तों ने कहा, परसों नाथपाई साहब ने कहा हम सभी यहां पर हैं—काश्मीरी भी हैं, महाराष्ट्रीयन्ज भी हैं, गुजराती भी हैं, मद्रासी भी हैं, लेकिन हिन्दुस्तानी कोई नहीं हैं।

क्या आज हम हिन्दुस्तान में किसी हिन्दुस्तानी को तलाश करने के लिए चिराग लेकर निकलें ? मैं चव्हाण साहब से कहना चाहता हूं कि किसने कौन सी तकरीर की उसका सवाल नहीं, हर शख्स उसके लिए जिम्मेदार है, फिरकेदाराना जमाअतें उसके लिए जिम्मेदार हैं। आज कौन ईमानदारी से कह सकता है कि मेरा दामन बचा हुआ है ? क्या कोई भी अपने सीने पर हाथ रखकर कह सकता है कि मैं इस कटघरे में खड़े होने के काबिल नहीं हूं ? मैं कहूंगा कि हम सभी हैं, बख्शी गुलाम मुहम्मद खुद है। इसलिए मैं उनसे जानना चाहता हूं कि कमीशन मुकर्रर हुए, मुबारिक हो, कमेटियां मुकर्रर हुई, मुबारिक हो, नेशनल इंटिग्रेशन कौंसिल बनी और उसके जलसे हुए, मुबारिक हो लेकिन नेशनल इंटिग्रेशन कौंसिल के जो फैसले हैं वह क्या कहते हैं ? नशिस्तन, गुफतन, बर्खास्तन—आये, बैठे और किस्सा कहानी सुनकर चले गये ?...(व्यवधान)...नेशनल इंटिग्रेशन कौंसिल के जो फैसले हुए, इतने लार्डेबिल और अच्छे फैसले जिसमें तमाम जमाअतें शामिल थीं, उन पर अगर आजतक कोई अमल हुआ होता तो आज चव्हाण साहब लाजिमन खड़े होकर कहते कि रांची में फसाद हुए, तीन सौ आदमी मारे गये, हजार आदमियों को फांसी पर लटका दिया। कभी एक बार भी यह कहा एक जगह पर फ़साद में, दो जगह के फसाद में या तीन जगह के फसाद मे ? आज हमें यह नहीं देखना है कि कौन करता है और कौन कौन नहीं करता है। जैसा कि मैंने आपसे कहा कि जिम्मेदारी हम सभी की है चाहे वह इधर बैठे हैं या उधर बैठे हैं।...(व्यवधान)... दादा आपकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है, आप भी अपना दामन बचाकर नहीं निकल सकते हैं। मैंने अभी कहा कि सबसे अव्वल मुजरिम मैं हूं। नेशनल इंटिग्रेशन कौंसिल में यह हुआ था कि जहां जहां फसाद हों वहां सख्त से सख्त सजा दी जायेगी। चव्हाण साहब आप बहुत बड़े एडमिनिस्ट्रेटर है। मि० नायक, हितेन्द्र देसाई, मि० दरोगा प्रसाद राय या जो भी आपके आबमी स्टेट्स में इस वक्त काम कर रहे हैं—उनकी मीटिंग भी आप बुलाने वाले हैं जैसा कि एलान हुआ है प्राइम मिनिस्टर की तरफ से—आप खुदारा उनसे कहिए कि जहां कहीं भी आइंदा इस किस्म के फसाद हुए उसी वक्त

[श्री गुलाम मुहम्मद बख्शी]

उस गवर्नमेंट को खत्म कर दिया जायेगा और फिर देख लीजिये कि एक भी फसाद नहीं होगा ...(**व्यवधान**) मेरी बात तो आप सुन लीजिये । इस हमाम में हम सभी नंगे हैं । मैं किसी पर कुर्ता नहीं डालता बल्कि सबसे पहले तो मैं खुद हूं । चव्हाण साहब से यही अर्ज कर रहा हूं कि बजाय इसके कि मुसलमान वोट देता है या नहीं क्योंकि मुसलमान जनसंघ को भी वोट देता है, मुसलमानों ने बंगाल में कम्युनिस्ट पार्टी को बरसरेइक्तिदार किया, पी०एस०पी० और कांग्रेस को मुसलमान वोट देते हैं लेकिन अगर मुसलमानों के वोट लेने के लिए कि अगर आज वह कांग्रेस की तरफ गए तो कल जनसंघ ने उनका गला काटा और फिर वह जनसंघ को तरफ गये तो कांग्रेस ने उनका गला काटा तब तो यही बेहतर है कि उनको आप एक तरफ कर दीजिये कि तुम्हारा कोई हक नहीं है इस मुल्क में, तुम वोट नहीं दे सकते हो ताकि उनकी जिन्दगी बची रहे । लेकिन ऐसा शायद आप नहीं कर सकते हैं, और न कोई कर सकता है । लेकिन बहैसियत एक हिन्दुस्तानी के मैं अर्ज करूंगा कि आप असर्ट कीजिये । दो, चार, पन्द्रह, बीस आदमियों को फांसी पर लटका दीजिये और दुनिया को बता दीजिये कि इसकी यह सजा मिली । तो मैं यकीन दिलाता हूं कि न चायबासा होगा, न भिवंडी होगा, न जमशेदपुर होगा और न थाणा होगा, न बंगाल होगा । लेकिन जो आपने फैसले किये है नेशनल इंटेग्रेशन काउंसिल में, और बहैसियत गवर्नमेंट के यह सारी आपकी जिम्मेदारी नहीं है, इसमें हमारी भी जिम्मेदारी है । लेकिन फिर भी जो कमेटी आपने बनाई और उसके जो फैसले हैं, उन पर अमल कीजिये । मेरी यही प्रार्थना आप से होगी ।

(شری غلام محمد بخشی (سری نگر) جناب صدر۔ معزز برادران پارلیمنٹ آج کئی دنوں سے کئی دوست ہندوستان میں فرقہ واری کے تمام پر جو کچھ ہو رہا ہے اس کے متعلق اپنے اپنے خیالات کا اظہار رائے کر چکے ہیں۔ میرا روئے سخن کسی کی طرف نہیں ہے نہ حکومت کی طرف ہے اور نہ کسی کی طرف ہے۔ میرا روئے سخن میری اپنی طرف ہے اور وہ اس لئے ہے کہ آزادی کے بعد یعنی پچھلے ۲۲ سالوں میں یہ ۳۲۱ واں فساد اس ملک میں ہوا۔ چونکہ میرے پاس وقت نہیں ہے کہ میں ان تمام فیکٹس اینڈ فگرس کو اس ایوان کے سامنے رکھوں کہ آزادی کے بعد جبکہ ہم کو اپنی گردن اونچی رکھنی چاہئے تھی۔ جب ہم نے ہندوستان کی جنگ آزادی لڑی تھی تب ہم سب ایک تھے۔ لیکن آزادی حاصل کرنے کے بعد ہندوستان کو ہم بھول گئے۔ انفرادیت ہم میں آگئی اور آج ہم ایک دوسرے کا گلا کاٹ رہے ہیں۔

میں نے کہا۔ پچھلے ۲۲ سالوں میں یہ ۳۲۱ واں فساد ہے یعنی پورا ایک سال ہم نے فرقہ وارانہ فساد میں لے لیا۔ اس میں چھوٹے فساد بھی ہوئے اور بڑے فساد بھی ہوئے۔ رانچی۔ جمشید پور۔ ناگپور۔ جبلپور۔ چے باسا۔ احمد آباد اور اب مہاراشٹر بھی اس میں شامل ہو گیا۔ یہ چار چاند ہم کس کو لگا رہے ہیں۔ میں کس کو ایکسپوز کروں۔ کیا چوہان صاحب کو ایکسپوز کروں۔ ایمانداری سے میں سمجھتا ہوں کہ ہم سب کے سب ممبر پارلیمنٹ۔ انسپائرڈ لیڈرشپ آف دی کنٹری۔ چاہے کوئی کسی بھی جماعت میں ہو مجرم کے طور پر اس کٹہرے میں کھڑے ہیں۔ کیونکہ ہم فیل ہوئے ہیں۔ سرکار بھی فیل ہوئے ہیں۔ میں کس کو الزام دوں۔ کس نے پہل کی۔ کس نے پہل نہیں کی۔ میں چوہان صاحب سے پوچھنا چاہتا ہوں آج آپ کے ہاتھ میں اقتدار ہے۔ ۲۲ سالوں سے آپ کے ہاتھ میں اقتدار رہا ہے۔ اگر چور چوری کرے۔ اگر بھائی بھائی کا قتل کرے۔ زمین کی بنا پر یا اور کسی بنا پر اس کو گرفتار کیا جاتا ہے اور پھانسی پر لٹکایا جاتا ہے۔ میں نہایت ادب کے ساتھ پوچھنا چاہتا ہوں۔ یہ ۳۲۱ واں فساد ہوا کیا آپ اپنے جواب میں بتلا سکتے ہیں کہ ہندوستان کے کتنے لوگوں کو جنہوں نے ان دنگے فسادیوں میں حصہ لیا۔ جنہوں نے قتل و غارت سے کام لیا۔ جنہوں نے بہو بیٹیوں کی عصمت دری کی۔ جنہوں نے لاکھوں انسانوں کو بے گھر اور بے در کر دیا چاہے ہندو ہو یا یا مسلمان ہو پھانسی پر لٹکایا گیا۔ آج ہمارا سر ندامت سے جھک رہا ہے۔ کہ ہم سینا تان کر یہ نہیں کہہ سکتے کہ ہم ہندوستانی ہیں۔ حالانکہ ۲۲ سالوں کے بعد ہماری یہ حالت ہونی چاہئے تھی کہ ہم گردن اونچی رکھتے۔ آغا صاحب اور دوسرے دوستوں نے کہا۔ پرسوں ناتھ پائی صاحب نے کہا۔ ہم بھی یہاں پر مہاراشٹری بھی ہیں۔ مہاراشٹرینز بھی ہیں۔ گجراتی بھی ہیں۔ مدراسی ہیں۔ لیکن ہندوستانی کوئی نہیں ہے۔ کیا آج ہم ہندوستان میں کسی ہندوستانی کو تلاش کرنے کے لئے چراغ لیکر نکلیں۔ میں چوہان صاحب سے کہنا چاہتا ہوں کہ کس نے کون سی تقریر کی اس کا سوال نہیں ہے ہر شخص اس کے لئے ذمہ وار ہے فرقہ وارانہ جماعتیں اس کے لئے ذمہ وار ہیں۔ آج کون ایمانداری سے کہہ سکتا ہے کہ میرا دامن پاک ہوا ہے۔ کیا کوئی بھی اپنے سینے پر ہاتھ رکھ کر کہہ سکتا ہے کہ میں اس کٹہرے میں کھڑے ہونے کے قابل نہیں ہوں۔ میں کہوں گا کہ ہم بھی ہیں، بخشی غلام محمد خود ہے۔ اس لئے میں ان سے جاننا چاہتا ہوں کہ کمیشن مقرر ہوئے مبارک ہو۔ کمیٹیاں مقرر ہوئیں مبارک ہو۔ نیشنل انٹیگریشن کونسل بنی اور اس کے جلسے ہوئے مبارک ہو لیکن نیشنل انٹیگریشن کونسل کے جو فیصلے ہیں وہ کیا کہتے ہیں [illegible]

گئے برخاست آئیے بیٹھیے اور قصہ کہانی سن کر چلے گئے ... (ویودھان) نیشنل انٹیگریشن کونسل کے جو فیصلے ہوئے اتنے لاڑیبل اور اچھے فیصلے جس میں تمام جماعتیں شامل تھیں ان پر اگر آج تک کوئی عمل ہوا ہوتا تو آج چوہان صاحب لازماً فخر ہو کر کہتے کہ رانچی میں فساد ہوئے تین سو آدمی مارے گئے ہزار آدمیوں کو پھانسی پر لٹکا دیا۔ کبھی ایک بار بھی یہ کہا کہ ایک جگہ پر فساد ہیں۔ دو جگہ کے فساد ہیں یا تین جگہ کے فساد ہیں۔ آج ہمیں یہ نہیں دیکھنا ہے کہ کون کرتا ہے اور کون نہیں کرتا ہے جیسا کہ میں نے آپ سے کہا کہ ذمہ داری ہم سبھی کی ہے چاہے وہ ادھر بیٹھے ہیں یا ادھر بیٹھے ہیں۔ ... (ویودھان) دادا آپ کی سب سے بڑی ذمہ داری ہے آپ بھی اپنا دامن بچا کر نہیں نکل سکتے ہیں۔ میں نے ابھی کہا کہ سب سے اوّل مجرم میں ہوں۔ نیشنل انٹیگریشن کونسل میں یہ ہوا تھا کہ جہاں جہاں فساد ہوں۔ وہاں سختی سے سخت سزا دی جائے گی۔ چوہان صاحب آپ بہت بڑے ایڈمنسٹریٹر ہیں۔ مسٹر نایک، ہتیندر دیسائی، مسٹر ڈرگا پرساد رائے یا جو بھی آپ کی آدمی ایڈمنسٹریشن میں اس وقت کام کر رہے ہیں۔ ان کی میٹنگ بھی آپ بلانے والے ہیں جیسا کہ اعلان ہوا ہے پرائم منسٹر کی طرف سے۔ آپ خدارا ان سے کہئے کہ جہاں کہیں بھی آئندہ اس قسم کے فساد ہوئے اس وقت اس گورنمنٹ کو ختم کر دیا جائیگا اور پھر دیکھ لیجئے کہ ایک بھی فساد نہیں ہوگا ... (ویودھان) ... میری بات تو آپ سن لیجئے۔ اس حمام میں ہم سبھی ننگے ہیں۔ میں کسی پہ کرتا نہیں ڈالتا بلکہ سب سے پہلے تو میں خود ہوں۔ میں چوہان صاحب سے بھی عرض کر رہا ہوں کہ

بجائے اس کے کہ مسلمان ووٹ دیتا ہے کہ نہیں کیونکہ مسلمان جن سنگھ کو بھی ووٹ دیتا ہے مسلمانوں نے بنگال میں کمیونسٹ پارٹی کو برسراقتدار کیا۔ پی ایس پی اور کانگریس کو مسلمان ووٹ دیتے ہیں لیکن اگر مسلمانوں کے ووٹ لینے کے لئے کہ اگر آج وہ کانگریس کی طرف گئے تو کل جن سنگھ نے انکا گلا کاٹا اور پھر وہ جن سنگھ کی طرف گئے تو کانگریس نے ان کا گلا کاٹا اور پھر وہ جن سنگھ کی طرف گئے تو کانگریس نے ان کا گلا کاٹا تب تو جی بہتر ہے کہ ان کو آپ ایک حرف کر دیجئے کہ تم کو کوئی حق نہیں ہے اس ملک میں تم ووٹ نہیں دے سکتے ہو تا کہ ان کی زندگی بچی رہے۔ لیکن ایسا شاید آپ نہیں کر سکتے ہیں اور نہ کوئی کر سکتا ہے۔ لیکن بہ حیثیت ایک ہندوستانی کے میں عرض کروں گا کہ آپ اریسٹ کیجئے نہ دو چار پندرہ بیس آدمیوں کو پھانسی پر لٹکا دیجئے اور دنیا کو بتا دیجئے کہ اس کو یہ سزا ملی تو میں یقین دلاتا ہوں کہ نہ جانے باسا ہوگا نہ بھیونڈی ہوگا۔ نہ جمشید پور ہوگا اور نہ تھانا ہوگا۔ نہ بنگال ہوگا۔ لیکن جو آپ نے فیصلے کئے ہیں۔ نیشنل انٹیگریشن کونسل میں اور بہ حیثیت گورنمنٹ کے یہ ساری آپ کی ذمہ داری نہیں ہے۔ اس میں ہماری بھی ذمہ داری ہے لیکن پھر بھی جو کمیٹی آپ نے بنائی اور اس کے جو فیصلے ہیں ان پر عمل کیجئے۔ میری یہی پرارتھنا آپ سے ہوگی۔]

श्री शशि भूषण (खारगोन) : अध्यक्ष महोदय, पिछले दिनों फरवरी और मार्च में श्री एस० के० पाटिल नागपुर गये और श्री गोलवालकर जी से मिले...(व्यवधान)... राष्ट्रीय समिति का उद्घाटन करने के लिये । उस के बाद भिवंडी में अप्रैल में श्री बलराज मधोक और श्री जगन्नाथ राव जोशी गये ।

श्री बलराज मधोक (दक्षिण दिल्ली) : यह सरासर झूठ है ।...(व्यवधान)...

अगर यह साबित करें तो मैं रिजाइन करूंगा नही तो मह रिजाइन करें । शर्म करो बोलते हुए । यह रेस्पांसिबिल हाउस है ।

श्री शशि भूषण : मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो यह कहा गया...(व्यवधान)

श्री शिव नारायण : यह गुंडागिरी कर रहे है ।...(व्यवधान)...

श्री शशि भूषण : जो यह कहा गया है कि पहले किसी ने पत्थर फेंका और उस के बाद झगड़ा शुरू हुआ, अध्यक्ष महोदय, अगर आज हम किसी नेता का स्वागत करें तो उसके लिये भी कम से कम तीन दिन चाहियें हार पहनाने के लिये, उस की तयारी करने के लिये अगर लोगों के गले काटने हों तो उसके लिये एक पत्थर का इंतजाम नहीं होता । उस के लिये पहले से तैयारी की जरूरत होती है । भिवंडी में जो कुछ हुआ वह बहुत शर्मनाक बात है । वहां पर 88 आदमी मरे हैं और उन में 27 हिन्दू हैं और उस में 18 तेलगू और तामिलभाषी लोग हैं । और बाकी वह लोग मारे गये मुस्लिम तथा 11 जो पुलिस की गोली से मारे गये ।

जो शिव सेना का रूप है, उन्होंने जिस तरह तमिलनाडु के खिलाफ, हरे और लाल झंडे के खिलाफ किया, और इसी प्रकार जो उन की नीति रही है उन के खिलाफ जो कि महाराष्ट्रियन नहीं है, उस नीति का हमें पूरा रूप वहां मिलता है । माननीय पीलू मोदी जरूर उन को सहयोग देंगे । मैं यह नहीं कहता कि वह फिरकापरस्त हैं । लेकिन यह बात जरूर है कि हिन्दुस्तान का सरमायापरस्त इतना कमजोर हो गया है, इसलिये हिन्दुस्तान का पूंजीपति आज अपना पहरेदार शिव सेना और आर० एस० एस० को बनाता है । कोई भी पूंजीपति नहीं हो सकता जो साम्प्रदायवादी न हो और आज यह लड़ाई हिन्दू और मुसलमान की नहीं हैं । यह लड़ाई तो गरीबी और अमीरी की है, अमीरी को खत्म करने की एक समाज-

[श्री शशि भूषण]

वादी लड़ाई है । उसको रोकने के लिए ये पहरेदार हैं पूंजीपतियों के चौकीदार हैं विदेशी और देशी पूंजीपतियों के और राजा-महाराजाओं के खिलाफ वह लोग उनके पहरेदार हैं । जब भी हमने हमारे देश में प्रगति का कोई कदम उठाया तो इन्होंने फिरकापरस्ती का बवंडर उठाया । आजकल फिरकापरस्ती उन इलाकों में खास तौर से की गई जो हमारे इंडस्ट्रियल सटर हैं, खास तौर से अध्यक्ष महोदय, बम्बई, रांची, अहमदाबाद में और भिलाई में । जहां-जहां हमारे देश में उद्योग हैं वहां-वहां खास तौर से ये झगड़े कराये गये । ये प्लांड झगड़े हैं । इनको अगर कोई कहे कि ये झगड़े प्लांड नहीं हैं, तो यह गलत बात है ।

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी): समाजवादी बनने के लिए कै लाख रुपये चाहिए, जरा बता दीजिए ।

श्री शशि भूषण : अध्यक्ष महोदय, एस० एस० पी० ने अपने को कितने में बेचा । ...(व्यवधान) । अध्यक्ष महोदय, चन्द्रभानु गुप्त को एस० एस० पी० ने किस भाव अपने को बेचा उससे ये अंदाज लगा सकते हैं । उस दिन सारी समाजवाद खत्म हो गई जिस दिन एक पूंजीपति के चरणों पर पड़कर आपने गन्ना मिलों के राष्ट्रीयकरण की बात का विरोध किया ।

अध्यक्ष महोदय, थाना में जब झगड़ा हुआ तो पुलिस कहां गई ? शिव सेना के एक काउंसिलर ने कहा कि यह जो पहाड़ी है इस पर मुसलमान इकट्ठे हो गए हैं । सारे थाने की पुलिस वहां चली गई और उसके बाद 5 घंटे बाद जब लौटी तो थाना नगर जला हुआ था । जब शिव सेना के काउंसिलर यह कर सकते हैं तो उनको गिरफ्तार क्यों नहीं किया ? मैं पूछना चाहता हूँ...(व्यवधान) । जब ये सारी "लाइक-माइंडेड पार्टीज" के एक होने की बात संघ स्वतंत्र-सिंडीकेट में एकता हुई.. (व्यवधान) ।

अध्यक्ष महोदय : जिस नाम के आगे 'शिव' लगता हो वह न बोलें आप ।

श्री शशि भूषण : अध्यक्ष महोदय, जब से इस देश में एक पूंजीपति ने यह कहा कि जितनी "लाइक-माइन्डेड पार्टीज" है, लोग हैं, उनको एक हो जाना चाहिए और वह लाइक-माइंडेड पार्टीज—संघ, स्वतंत्र, सिंडिकेट—जब से एक हुई हैं, हिन्दुस्तान में फिरकापरस्ती और दंगे शुरू हुए । आज बड़ी लोग, चाहे वह गोवलकर को गले मिलायें चाहे वह फिरकापरस्ती करें, इस देश की गरीब जनता की जो आवाज है, यह उन सबको गले मिलाकर नहीं रोक सकते ।

श्री शिव नारायण : यह निकम्मी सरकार है, यह निकम्मी सरकार है । (व्यवधान) ।

अध्यक्ष महोदय : शिव नारायण जी बैठिये ।...शिव सेना शिवनारायण जी की नहीं है ।

श्री शिव नारायण : मैं हाथ जोड़ता हूँ । मैं अब कुछ नहीं कहूँगा ।...आप इन्हें संभालिये, अध्यक्ष महोदय इनको संभालिये ।

अध्यक्ष महोदय : मैं इधर तो संभाल लूंगा । आप तो ऐसा मत करिये ।

श्री शशि भूषण : अध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान में जब भी फसाद हुए हैं, क्या किसी व्यक्ति को फांसी कहीं लगी और मेरा यह पूरा विश्वास है कि जब तक लोकल अथारिटीज नहीं मिलती, जब तक पुलिस का साथ नहीं होता डिप्टी कमिश्नर का साथ नहीं होता, तब तक कोई दंगे नहीं होते और जिस इलाके में दंगे हों, वहां के डी० सी० को, वहां के एस० पी० को फौरन बरखास्त करना चाहिए । जैसे शिव सेना है, वह महाराष्ट्र समिति की पुत्री है,

श्रोर शिव सेना के बाल ठाकरे का बयान अभी श्री फरनैन्डीज ने पढ़ कर सुनाया। सारा देश जानता है कि इस से बड़ा राष्ट्रीय शत्रु कोई नहीं हो सकता। अगर आप मजबूत हैं तो उन को गिरफ्तार क्यों नहीं करते ? अगर आप डरते हैं कि शिव सेना को वैन करने से, जो सैन्य संगठन हैं उन्हें वैन करने से फसाद बढ़ेंगे तो एक बार उन को बढ़ जाने दीजिये। उन का मुकाबला कर लिया जाये। जो गरीबी और अमीरी की लड़ाई है उस को तेज कर के मुकाबला किया जा सकता है ; जो देश के शत्रु हैं उन का मुकाबला करना चाहिये। आर० एस० एस० को वैन करना चाहिये···(व्यवधान) ...,शिव सेना को बैन होना चाहिये। ...(व्यवधान)...

श्री हुकम चन्द कछवाय : **(व्यवधान)

MR. SPEAKER : Order, order. I will have to expunge undersirable remarks. I will expunge these remarks.

Now, Shri Bakar Ali Mirza.

SHRI BAL RAJ MADHOK : Mr. Speaker, Sir, Shri Shashi Bhushan said that I went to Bhiwandi and then the riot took place. I do not know where Bhiwandi is. I have never been there. I do not know anything about that place. This is the kind of lies which create tensions and are responsible for the riots in this country. *(Interruption)* Therefore, I want that what he said should be expunged. Those remarks must be expunged. *(Interruption)* If he can prove that I went over there, I am prepared to resign. And if he cannot do that, let him resign his seat.

श्री शशि भूषण : यह गलत कहते हैं, यह भिवण्डी गये हैं, यह कतई झूठ बोलते हैं। वह अहमदाबाद गये तो वहां झगड़ा हुआ, महाराष्ट्र गये तो वहां झगड़ा हुआ।

अध्यक्ष महोदय : आज हाउस ऐडजर्न हो रहा है, आज तो हम को सीरियस हो जाना चाहिये।

SHRI BAKAR ALI MIRZA (Secunderabad) : Sir, if you want to solve the communal problem, it is very necessary that we should be ruthless in our analysis and be completely honest with ourselves even if it hurts us I heard Mr. Vajpayee. Mr. Vajpayee said that the Muslims started the riot and then the Hindus continued it. He also went further. He divided the Muslim community into three categories. I would have been very glad if he had divided the Hindus also similarly into the categories which he thinks they are in. Then, he said that Muslim communalism—this is very important—is making the Hindus militant. *(Interruption)* He said that Muslims communalism is making the Hindus militant. Mark the word 'militant'. He did not say that Hindus are becoming communal also. He said they are becoming militant.

Then, Mr. Dange put the blame on the Shiv Sena. He also said that we are ready to fight ; leave us alone ; we will fight the Shiv Sena ; they are responsible for these riots ; we will fight with our goondas and our volunteers.

Then the Prime Minister came and said that Mr. Vajpayee is entirely wrong : it is the Jan Sangh and the RSS who are responsible for the riots and we will fight to the last. All the analysis was of a different character but the conclusion is the same. They are all for a military solution of the problem Not one of them said why there is this communal problem after 22 years. We talk of secularism, National Integration Council and all that. But have they asked why there is this communal problem ? Can you say why the communal problem today is more intense, more deep than it was during the British period ?

We were blaming the British for their policy of divide and rule. But during British rule, communalism was under control. Whenever they wanted, they had riots. When they did not want riots, they did not have them. During the war, there was not a single riot in the country. What happened then to the communal forces that

**Expunged as ordered by the Chair.

[Shri Bakar Ali Mirza]

were operating ? So, communal riots have always been preplanned before independence and after independence. They talk of national integration, re-writing our history, having inter-marriages etc., as if the people are responsible for the riots and have to be educated. I maintain the people of India have all along resisted a communal approach In spite of the money, pressure and prestige of the British Government, the Muslim League and the Hindu Maha Sabha were nowhere in the picture. They could not form a single government any where. It is the people of India who were resisting a communal approach. But he educated classes, who were talking about 14 points and all that, they were always having negotiations with Jinnah, because the British Government wanted to build a picture of Jinnah as an emancipator. He put forward the two nation theory. When partition came, all our leaders, despite all their lectures and their sacrifices, at the last moment succumbed to British diplomacy, excepting Gandhi and Ghaffar Khan. After yielding their argument was, "It is Jinnah who believed in the two nation theory. We do not believe in the two-nation theory. We call it a political division." If it was a political division, what did the Congress do ? All the officers and people of India were given the choice to opt for India or Pakistan, as they liked. Not only that. After the riots started, they did not close the frontiers and say, this is our country ; we are responsible for the security of the people who are within this frontier. Instead, they allowed people to go from one side to other. That means, we accepted, the Congress accepted but did not admit that it accepted the two-nation theory, and it created an idea that Pakistan was the protector of the Muslims and India was the protector of Hindus. If they had closed the frontier, there would have been less bloodshed, as it happened in Ahmedabad, when Pakistan closed the frontier. Otherwise, if people had started moving from Ahmedabad to Pakistan, there would have been greater bloodshed. Why not close the frontier and say that the people within the frontier would be protected by the Government and the people of India ?

We have to understand the psychology. On 14th August, 1947 Mr. Balraj Madhok swore loyalty for a country from Peshawar to Dacca. But on 15th August 1947, his loyalty had shrunk and it was loyalty to a country fram Amritsar to Darjeeling or Shillong. What happened to that loyalty to Panjab and Lahore ? I ask my Hindu and Muslim brethren, you cannot change your mind and attitude as if it is an elecrict light to be switched off and on. We divided the country into Hindus and Muslims. The Hindus of India would become the protectors of the Hindus of India, the Akhand Bharat.

Pakistan came to protect Akhand Bharat Muslims. That is how our mind is functioning. Today the same mind is functioning and it takes shape in a different form. The Jansangh is very angry that Pakistan Muslims are loyal to the Indian Muslims. So also the Hindus of India are more loyal to the Hindus of Pakistan than they are to their Muslim brethren in India. Look at the amount of noise that is made when some refugees coming from Pakistan are not given shelter. Is the same concern shown about people who have been slaughtered in Ranchi, Jabalpur or Bombay ? Let us be honest to ourselves. So, we both are the same side of the picture. Unfortunately for the Muslims, this friendship to Pakistan Muslims has become a political matter because it is a country with a Muslim Government. Hindus have no choice. If the Hindus had a choice, they would have acted exactly the same way.

Therefore, if you want to solve this psychological problem you must reverse the process and that reversal is not possible by the Government because government has come to a stage where, be it the minorities or our problems with China or Pakistan, we have no initiative left. Another way is to have a dialogue between the people of India and the people of Pakistan, because they are one people though in two countries. That was possible and that started when Badshah Khan visited India. That was a dialogue between the people. For the first time in history the people of India talked with the people of Pakistan. Similarly, in Bengal similar movement was going on. People used to say : *Eh Par Bengal* and *Oh Par Bengal*. The two Bengals are one. Only a few days before there was a broadcast from Dacca where someone said "I am a Muslim but I am also a Bengalee and we cannot live without Tagore". That was not possible three years ago. This dialogue must continue and the government should try to help in

this process. But our External Affairs Minister refuses to grow up. If he does not manage to grow up he might be considered over-aged for his office

Then I come to another important problem. There is evidence so show that there was sufficient warning. There were about 700 policemen, more than a regiment of the army. And 700 is a very large number. In spite of the warning, in spite of the police force and the army, the government did not take any precautionary measures. For example, when Shri Nanda was the Home Minister and there was some trouble in Calcutta he rushed there and within two days he was able to stop the riot from spreading. Here neither the Chief Minister nor the Home Minister moved. They went to see the ashes after the couple of days. Therefore, if you want really to take administrative action, you must make the government of the country responsible for law and order. After all, it is the main function of the government to maintain law and order. Once law and order fails, that government has failed. Secondly, all the officers on the spot who are responsible, the District Magistrate, the Superintendent of Police and so on must be made responsible for giving proper warning in time for all riots and making arrangements for the security of the people.

But, in the ultimate analysis, we have to learn to live together. China has 700 million people who dress alike and work alike. The Defence Minister says that he will take China and Pakistan together. But they are one united people whereas we are divided in caste, community, language and all that. We have to re-establish our position in the world, especially at a time when the foreign countries are interested in the division of our country.

Here the press has also to play an important role. I will give one instance which Shri Vajpayee will appreciate. In the 'Organiser' it was said that Badshah Khan donated money for Al Fateh, the terrorist organisation. There was a question in Parliament. I wrote to the 'Organiser'. I also wrote after the question was asked and was not published in that paper. I talked to Mr. Vajpayee but nothing happened. There was no contradiction in that paper. Now, I have gone to the Press Council. Unless the Press also comes forward and cooperate and helps to create the movement of integration we will not succeed.

Finally, while it is the maiority which looks after the interests and safety of the minorities, it is also very important that the minority community also has a duty. It should go out of its way to create confidence in the majority community because its security depends—it does not matter in what country, under what system of Government—on the goodwill of the majority. I was there in Germany before the Nazi movement started and nobody could imagine in a country like Germany one million jews would be slaughtered in cold blood out of communal frenzy. There is a lesson for us.

DR. SUSHILA NAYAR (Jhansi) : Mr. Speaker, Sir, I wish to say in the first instance that after spending three days in the riot affected areas and visiting almost every affected home and every affected areas I come back with a sense of deep sorrow and deep shame. What has happened in Bhiwandi, Jalgaon and some other places is such a terrible thing that I am amazed and shocked to find an attempt in this august House to make political exploitation out of this deep tragedy.

I want to submit to my brother colleague, Shri Vajpayee, that it makes little difference as to who starts a riot. So far as the present riots are concerned the judicial inquiry will bring out as to who started and who did not start the riot at Bhiwandi and Jalgaon, but the fact remains that we are well aware how riots were instigated in pre-partitioned India, how Britishers sent some people to disrupt our meetings. Can't Pakistan have a few people to throw a few stones to start some trouble somewhere ? Are we going to put the honour and dignity of our country in the hands of these few people by retaliating in the way we have done even if somebody started the trouble from the other side, although I do not know what has happened here ? Further, we must take very great care and see and go deep into some of these things and understand the causes and motivations I want to know, why should only the Muslims start the riot. They know if they provoke majority, nothing but death awaits them Life is very dear to everybody. Will a man

[Dr. Sushila Nayar]

or a group deliberately invite suicide ? No. I have talked to some of the young people among the Muslims and also among the Hindus and I wish to tell this august House that some of these people, if they react in a particular manner it is because a sense of frustrations has come in them. They have come to feel that this Government cannot protect them ; they have to protect themselves They have come to feel that if they have to die, they would rather die fighting than die a dog's death. This is what was told to me by youngmen of both communities.

What is at the root of it all ? It is fear and distrust. Have we done anything to remove this fear and distrust ? No. As I was coming back from Bhiwandi Madam Prime Minister's cavelcade was going to Bhiwandi, and I had to stand for about 50 minutes at the roadside till all the crowd passed. Some of the Muslim young people, who were in the trucks behind me which also had been stopped, came to talk with me. They said something which went deep in my heart. They said, "We do not say that the fault does not lie on both sides ; we do not say that we have no faults but we are sick and tired of being suspected as Pakistanis day in and day out" Have these Muslims to prove their loyalty to this country every day ? Have they not shed their blood in the war with Pakistan ? Why do we expect them to prove their loyalty at every step ?

They said another thing which touched me very deeply. They said, "We go to the cinema ; at the end of the cinema there is the National Anthem when many people start walking away." I was told in Bhiwandi that there has been considerable tension on this account because when the Muslim young people walk away as the National Anthem is being played, people think that it is a mark of disloyalty towards the country. But the same thing is done by the Hindus. I have been to cinemas occasionally and I have seen how the Hindus also walk away at that time Do we suspect those Hindus of disloyalty ? We do not. Why is there this double standard ? I beg of this Government, for heaven's sake stop playing the National Anthem at the end of the cinema. It does not create respect ; it creates disrespect for the National Anthem and the National Flag. For heaven's sake stop singing the National Anthem the last thing at night on the radio when everybody is in bed. Either they should stand up to give respect to it or you should stop playing the National Anthem on the radio when everybody is lying flat in bed.

I wish to say with full sense of responsibility and deep sorrow that it is speeches like Shri Shashi Bhushan's speech that spread communalism in this country. It is these people who try to make political capital out of the minorities. I wish to submit to the Prime Minister in all humility and in the name of some affection that her father had for me as well as for her, for heaven's sake lift this problem out of party politics and make it a national problem : do not make it a vote-catching device by anybody.

I come to my own experience in these sorrow-stricken towns. It is not merely political exploitation but there is also the economic rivalry that is at the bottom of it. In Bhiwandi the factories burnt were those of Marwaries and Gujaratis. In Jalgaon, three-storey houses of the rich Baghban community, who were competitors with some Patidar community, in the export of banana, were all razed to the ground As I went into Bhiwandi, I found a row of about 30 Telugu people standing in a queue wanting to get into the bus. I went to talk to them. I asked them, "Where are you going ?" They said :

> अम्मा, यह सब हो गया। सगे-वाला बम्बई में है, वहां जायगा, फिर हैदराबाद जायगा।

I said, "Do you not know that in Hyderabad also there has been trouble in the name of Telengana etc. These things happen. I am sorry about it but things will quieten down" They said, "Anyway, Amma, we will go to Bombay, see what happen and then we will decide" As I was getting into the car, one of the gentlemen with a Gandhi topi belonging to the Congress of Shri Chavan, I believe, came and started quarrelling with me. He said, "How is it senior people like you come and spread rumours here ?" I asked "What rumours have I spread ?" He said, "You are saying there is trouble in Telangana, this and that." First I did not understand what he meant. I tried to explain to him that he was wrong

in his surmise. And then some other people said, "Look, don't you see they want these people to go away so that there are jobs for the local people ? They do not want Andhra people to stay here." So, this Shiva Sena mentality has crept into the minds of the Congress people there also.

19.00 hrs.

We talk of socialism ; we talk of secularim. But I wish to submit, in the name of secularism and socialism, what is it that we find ? We find naked fascism. I was deeply disappointed when the Prime Minister in her impassioned speech did not say a word against Shivs Sena. She castigated the R.S.S., the Jana Sangh, etc., etc. I hold no brief for any communal party, be it of Hindus, be it of Muslims. But I do say that the Father of the Nation laid down his life to wash the stains of blood which we had sustained in the course of those terrible pre-partition riots. He did not say it was the Muslim League who started it. He paid the supreme price. Jawaharlalji during his time held the flag aloft. But what has happened today ? It is naked fascism on the one side and provincialism, selfishness and the desire to get the votes of the minorities somehow or other, on the other.

What happened in Jalgaon ? Jalgaon is a very peaceful town. There are good people there ; both Hindus and Muslims have long-standing brotherly relations. In Bhiwandi too, it is the same. There is a municipality at Jalgaon. There was a proposal to have a vote of no-confidence against the Chairman of the Municipality. Four Muslim Councillors held the balance. They were told by the other community, "You should vote with us." And these Muslim Councillors had the temerity, had the courage, to vote according to their own liking." They were threatened that they would be taught a lesson. And they were taught a lesson. They were taught a lesson which has not only inflicted wounds on Maharashtra but on the whole of India for it has disfigured her.

It is a strange theory I am hearing in this house that if anywhere there is a riot, you dismiss that Government Ten people can go and start a riot anywhere and you want that Government to be dismissed. What is this type of reasons ? I do not say that the police has not been remiss. I believe that there were ample opportunities in Bhiwandi and Jalgaon and due note was not taken of the warnings. It should have been done.

Now, after the riots, I pay a compliment to the Government of Maharashtra that they are doing a fine job with relief and rehabilitation work. What is the good of it ? Today, you give relief and rehabilitation and tomorrow trouble will flare up somewhere else. We have to go deeper into it. I found that the men above 40 years in both communities were still friendly with each other. I will say that it is to the credit of Mr. Vajpayee's party that Mr. Jogelkar, the President of the Local Jana Sangh party in Bhiwandi was highly respected by Muslims and Hindus alike and they had faith and confidence in him. But Hindus and Muslims told me, "We have lost control over the younger element." They are becoming extremists. Why are they becoming extremists ? It is for two reasons. This Government is not curbing the spirit of lawlessness all over the country. And this Government is not giving out lets, channels for the creative energy of the youth of the nation to be utilised properly. And this Government is far too anxious to have minorities votes for itself and tries to exploit every situation, even a communal situation to that end. This must stop. For heaven's sake take the communal problem out of the political arena and make it a national problem, take it out of the vote catching business and make it into something of a question of the honour of India

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : अध्यक्ष महोदय, अच्छा होता अगर आप गृह मन्त्री महोदय के बाद मुझे बोलने का मौका देते । मैं मानता हूं कि नियम 193 के अन्तर्गत जवाब का कोई प्रावधान नहीं है, लेकिन यह विवाद काफी लम्बे समय तक चला है । इसमें अनेक बातें ऐसी कही गयी हैं जिनके बारे में उत्तर देना आवश्यक हो सकता है । लेकिन मैं आपकी व्यवस्था स्वीकार करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : आप ने पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन के लिये लिखकर दिया इसलिये आपको मौका दे रहा हूं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अभी गृह मन्त्री महोदय उत्तर देने वाले है। उस दिन गृह मन्त्री महोदय सदन में नहीं थे, बीमार थे। शायद मैंने बडी कठोर भाषा में उनकी आलोचना की। लेकिन उस सम्बन्ध में मैं एक बात स्पष्ट करना चाहूंगा। जब मैंने यह कहा था कि श्री यशवन्त राव चव्हाण महाराष्ट्र के दंगों के समय रोये और गुजरात के दंगों के समय इस तरह से व्यथित नहीं हुए, तो शायद यह धारणा पैदा हुई, जो मैं पैदा नहीं करना चाहता था, कि श्री यशवन्त राव चव्हाण स्वयं को केवल महाराष्ट्र का नेता समझते हैं और देश के अन्य भागों के प्रति उनके हृदय में कोई ममता या आत्मीयता नहीं है। मैं निवेदन कर रहा था कि साम्प्रदायिकता की समस्या को पार्टी के दायरे से निकालकर देखना होगा। अहमदाबाद में दंगे हो गये वहां सिंडीकेट का शासन हैं इसलिये उन दंगों के लिये सिंडीकेट की निन्दा की जाय, उन दंगों पर हम उतने व्यथित न हों, जितने महाराष्ट्र में हुए दंगों के लिए, जहाँ इंडिकेट का शासन है, वहां अधिक व्यथित हो जायें। (व्यवधान)

SHRI NAMBIAR (Tiruchirappalli) : On a point of order, Sir. Is it a second speech or personal explanation ?

SHRI SHEO NARAIN : Are you the Master of the House ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : और उसी संदर्भ में मैंने कहा था कि मेरी उस बात को गलत ढंग से न देखा जाना चाहिए।

लेकिन केवल एक बात नहीं है स्वयं प्रधान मन्त्री महोदय ने मेरे भाषण को जानबूझ कर तोड़ मरोड़ कर पेश करने की कोशिश की है।

श्री शशि भूषण : अध्यक्ष महोदय, यह इन को किस बात के लिये विशेष समय मिल रहा है।

MR. SPEAKER : Will you please sit down ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, प्रधान मन्त्री ने कहा...

THE PRIME MINISTER, MINISTER OF FINANCE, MINISTER OF ATOMIC ENERGY AND MINISTER OF PLANNING (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : Have you received a written copy of his personal explanation in advance, Sir ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, प्रधान मन्त्री जी को क्या आपत्ति है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : कोई आपत्ति नहीं है, मैं जानकारी चाहती थी।

MR. SPEAKER : Mr. Vajpayee said that he wanted to make a personal explanation. It is not a speech. It is a personal explanation. I have allowed it. The Prime Minister wants to know whether I have received a written copy in advance. No.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, आपने इजाजत दी है, जो गलतफहमियां मेरे भाषण के बारे में पैदा की गयी हैं उनको दूर करने का मुझे अधिकार है।

प्रधान मन्त्री ने कहा—

"Shri Vajpayee has used this occasion to launch an attack on the Muslims in particular and, I think, all minorities."

"आल माइनारिटीज" की कहीं इस विवाद में चर्चा ही नहीं आई है। यह माइनारिटीज कहां से आ गई ? क्या मेरे भाषण में माइनारिटीज का उल्लेख है ? अध्यक्ष महोदय मैंने अपने भाषण में सारे मुसलमानों को भी दोषी नहीं ठहराया। क्या इस सत्य को झुठलाया जा सकता है ? मैंने अपने भाषण में जो कहा था, मैं उसकी ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, आप मेरे भाषण का अंश देखिए। क्या प्रधान मन्त्री ने इसे सुना नहीं ? मैंने कहा था कि सारा मुसलमान सम्प्रदाय दंगे नहीं चाहता—मुसलमानों में देश-भक्त भी हैं, मुसलमानों में अमन-पसन्द भी हैं। जो रोजी-रोटी के लिए मजदूरी करके अपने बीबी-बच्चों

का पालन करते हैं वह हिंसा का, हत्या का और अग्निकांडों का खेल नहीं खेलना चाहते हैं। मगर प्रधान मन्त्री ने सारे मुसलमानों को लपेट दिया और सारे मुसलमान ही नहीं जैनों को, बौद्धों को, सिखों को, हरिजनों को और पिछड़े हुए वर्गों को और इस तरह की धारणा पैदा करने की कोशिश की है मानो सारे अल्प-संख्यकों के खिलाफ हैं और इस देश में अल्पसंख्यकों के अलम्बरदार हैं तो केवल प्रधान मंत्री। प्रधान मन्त्री महोदया ने देखा होगा श्री फ्रेंक मोरेस का लेख : वह एक ईसाई हैं। उन्होंने प्रधान मन्त्री से अपील की है 'ऐक्सप्लाइटिंग दि माइनारिटीज' परमात्मा के लिए अल्पसंख्यकों का ऐक्सप्लायटेशन मत करिये।

अध्यक्ष महोदय, मुझ पर आरोप लगाया गया कि मैं अपने भाषणों के द्वारा हिन्दुओं को भड़काना चाहता था। क्या हिन्दुओं को भड़काने के लिए मुझे यही जगह है ?...(व्यवधान) ?

श्री शशि भूषण : आप सभी जगह फिरकापरस्ती की आग भड़काते हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या मैं इस सदन के बाहर भाषण नहीं देता ? आपकी कृपा से मुझे सुनने के लिए हजारों लोग आते हैं। अभी मैं गृह मन्त्री जी के चुनाव-क्षेत्र में गया था—सतारा, शोलापुर, कराड़, अहमदनगर और गृह मन्त्री जी अपने गुप्तचर विभाग से जांच कराकर बतायें कि मेरे भाषण में क्या आपत्तिजनक बात थी ? कभी मैंने तनाव पैदा करने वाली बात नहीं कही इससे बहुत से मैम्बरों को ताज्जुब हुआ होगा कि उस दिन सदन में मैं इस तरह का क्यों बोला। अध्यक्ष महोदय, मैं जान-बूझकर बोला। मैंने धमकी नहीं दी थी। मैं चेतावनी देना चाहता था। आप इस चेतावनी पर कान दीजिये। अगर यह लोकसभा इस चेतावनी को नहीं सुनेगी तो देश में दुष्परिणामों को नहीं रोका जा सकता। यह धमकी नहीं हैं।

कुछ माननीय सदस्य : यही बात है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यह चेतावनी है। क्या मुस्लिम सम्प्रदायवाद के साथ समझौता करके हम हिन्दू सम्प्रदायवाद को बढ़ने से रोक सकते हैं ? नहीं रोक सकते। और इसलिए आप अगर लड़ने का फैसला करते हैं तो दोनों तरह की सम्प्रदायिकता के साथ लड़ने का फैसला करिये, हम आपके साथ हैं। मगर उस दिन तामीरे-मिल्लत के बारे में प्रधान मंत्री ने एक शब्द भी नहीं कहा। शिव सेना के बारे में वह मौन धारण करके बैठी रहीं। हमने बम्बई में शिव सेना के साथ समझौता करने से इन्कार कर दिया। हम शिव सेना के साथ समझौता कर सकते थे और शिव सेना के नेता श्री बाल ठाकरे ने कहा था—अभी जाता जाता डोका मारला होता!...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, यह क्या हो रहा है।...(व्यवधान)।

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय मेरा प्वाइन्ट आफ आर्डर है।

श्री शशि भूषण : अध्यक्ष महोदय, यह पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन नहीं है। मैं भी इनको जवाब देना चाहूँगा।

अध्यक्ष महोदय : आप पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन स्पेसिफिक मैटर्स पर दे दीजिए, उससे आगे कुछ नहीं कहिए।

श्री कंवर लाल गुप्त : प्रधान मन्त्री क्यों बैचेन हो गई, बोलने क्यों नहीं देतीं। बैचेन मत होइये, जरा सुनिये।

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, अगर कोई नियम आप मानने के लिये तैयार नहीं हैं, तो खामख्वाह बहस होगी। आप ने श्री वाजपेयी को व्यक्तिगत सफाई की इजाजत दी, लेकिन मैं तो व्यक्तिगत सफाई का कोई वाक्य इसमें नहीं देखता। वह तो एक बहस का जवाब दे रहे हैं। अगर आपको जवाब का अधिकार देना है तो दीजिये, मुझे कोई ऐतराज नहीं है, लेकिन

[श्री मधु लिमये]

व्यक्तिगत सफाई वाली प्रक्रिया का दुरुपयोग नहीं होना चाहिये। मुझे याद है श्री वाजपेयी हमेशा इन चीजों के बारे में टोकते हैं। मैं तो कभी बोलता नहीं क्योंकि मैं सदस्यों को मौका देना चाहता हूं (व्यवधान)। मैं कोई वाजपेयी से बदला नहीं ले रहा हूं, मैं हमेशा मौका देना चाहता हूँ, लेकिन आखिर कोई प्रक्रिया तो होनी चाहिये। अगर उनका लिखित जवाब आ जाता, उसमें सफाई आ जाती और प्रक्रिया के अनुसार काम होता तो यह झंझट पैदा न होता मैं कहना चाहता हूँ कि नियमों का पालन होना चाहिये।

अध्यक्ष महोदय : मैं आप से बिल्कुल सहमत हूँ। मैं इस वक्त तक देखता रहा...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप मुझ को बहस का जवाब देने का मौका दें। आपने उस की इजाजत नहीं दी।

अध्यक्ष महोदय : इसमें बहस की कोई बात नहीं है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बहस की बात कैसे नहीं है ?

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपको पर्सनल एक्सप्लेनेशन का मौका दिया। लेकिन आपने अभी तक स्टेटमेंट नहीं दिया।

SHRI M. L. SONDHI (New Delhi) : Sir, you may hear my point of order. Let me make a brief submission on this.

MR. SPEAKER : Let me first reply to the first point of order.

SHRI M. L. SONDHI : This is a connected matter.

MR. SPEAKER : I shall listen to it later on.

SHRI M. L. SONDHI : You do give an opportunity whenever a point of order is raised to enable a few Members to bring their points of view. And this has happened on many occasions when Shri Madhu Limaye is holding his point of order.

MR. SPEAKER : You are the only gentleman who will go on like this. This is the last time that I want to avoid this headache.

SHRI M. L. SONDHI : You may please hear me before making this remark.

MR. SPEAKER : First I want to reply to this point of order.

SHRI M. L. SONDHI : I am only claiming my right.

MR. SPEAKER : I say there is no right. Please sit down. Let me reply to the first point of order What is all this wasting of the time ? The point of order raised by Shri Madhu Limaye is fully justified. I am sorry that I could not trace that request of his. Please confine yourself to the personal explanation and not enter into a regular debate.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : डिबेट मैं कहां कर रहा हूँ ? मैंने कहा था कि भाषण में मैंने यह बात नहीं कही। प्रधान मन्त्री ने मेरे मुंह में यह बात डाल दी। मैंने धमकी नहीं दी, मैंने चेतावनी देनी चाही थी। क्या यह पर्सनल एक्सप्लेनेशन नहीं है ?.....

अध्यक्ष महोदय : इसमें बहुत फर्क है, आप डिबेट में पड़ गये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : डिबेट तो थोड़ा बहुत होगा और अभी गृह मन्त्री जवाब देने के लिए तैयार हैं।

अध्यक्ष महोदय : आप संक्षेप में अपना बयान दे दीजिये।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मैं भी जवाब देना चाहती हूँ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैंने प्रधान

मन्त्री को निमन्त्रण दिया है कि वह सम्प्रदायवाद के सवाल पर मेरे साथ आल इंडिया रेडियो पर एक पब्लिक बहस करें। इस देश की जनता तय करेगी...

अध्यक्ष महोदय : वह पर्सनल एक्सप्लेनेशन थोड़े ही है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : लेकिन जो बातें मैंने अपने भाषण में नहीं कहीं, उन बातों को दोहराना, जो तथ्य मैंने रक्खे उनका जवाब न देकर एक जुनून जगाना, स्वयम् को अल्पसंख्यकों का अलम्बरदार बनाने की कोशिश करना, यह समस्या से लड़ने का तरीका नहीं है। भिवण्डी एक चेतावनी है, भिवण्डी एक चुनौती है और देश की जनता को इस चेतावनी को सुनना होगा, इस चुनौती को स्वीकार करना होगा, मगर इसकी पहली शर्त यह है कि साम्प्रदायिक समस्या को दलगत राजनीति से निकालना पड़ेगा। क्या प्रधान मन्त्री यह करने के लिये तैयार हैं। उनका भाषण कहता है कि वह इसके लिये तैयार नहीं हैं। उन्होंने मेरे भाषण को गलत ढंग से पेश किया।

श्री मधु लिमये : उनकी सफाई हो जाने के बाद मेरा दूसरा व्यवस्था का प्रश्न है।

MR. SPEAKER : Order, order.

SHRI M. L. SONDHI : Points of orders are allowed only for the S.S.P's.

MR. SPEAKER : You see the rule. The Minister has got every right to intervene. A Minister can intervene at any time.

SHRI M. L. SONDHI : My name is Sondhi.

MR. SPEAKER : I know it. Who does not know Shri Sondhi ?

SHRI M. L. SONDHI : I crave your indulgence. When you were pleased to admit this personal explanation which Shri Atal Bihari Vajpayee had asked for, it was because this House is concerned with a very serious matter ; this relates to the impact of the Prime Minister's participation here or outside the House ; she visited Bhiwandi and other places, and if at those places she used something which Shri Atal Bihari Vajpayee said here in order to distort and in order to camouflage the situation, how does it help the situation, in her capacity as Prime Minister ? I had been to Bhiwandi, and I know that neo-Buddhists have been killed there and they have suffered. If they are suffering, can it not be brought up here ?

MR. SPEAKER : This is no point of order.

SHRI M. L. SONDHI : May I ask the Home Minister what has happened to Dr. Acharya's maternity home where a child two days old had to be thrown from the maternity home ? What did they do to Dr. Acharya ? Dr. Acharya is a man of sterling qualities, a man after Mahatma Gandhi.....

MR. SPEAKER : I am not going to allow this. This will not form part of the record.

SHRI M. L. SONDHI :**

श्री शिव नारायण : जब कोई भी मैम्बर इधर से या उधर से खड़ा हो उसको आपको बोलने देना चाहिये। अगर बोलने नहीं देंगे, इसके बारे में तो प्रोसीडिंग्ज नहीं चल पाएगी।

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : When you allowed Shri J. M. Biswas yesterday to give a personal explanation, I fully remember that whatever he had given in writing he had read out, but he used only certain expressions *extempore* which you expunged. So, you have to decide what portion of Shri Atal Bihari Vajpayee's explanation should remain on record.

MR. SPEAKER : I shall look into it.

SHRI J. B KRIPALANI : May I request that this may stop here ? (*Interruptions*.

**Not recorded.

MR. SPEAKER : The Prime Minister can speak at any time.

श्री मधु लिमये : अगर प्रधान मन्त्री जी व्यक्तिगत स्पष्टीकरण देने जा रही हैं तो मुझे इस पर एतराज है। वह लिखकर दे दें और आप उसको एग्जेमिन कर लें तब ठीक होगा। इस पार्लियामेंट को दो दल चुनाव का अखाड़ा बना रहे हैं, सत्ताधारी कांग्रेस और जनसंघ। इनके अलावा भी राजनीतिक दल मौजूद हैं। इस बहस का दुरुपयोग नहीं होना चाहिये व्यक्तिगत स्पष्टीकरण के नाम पर। आप प्रधान मन्त्री को भी इजाजत न दें।

श्री कंवर लाल गुप्त : ये दोनों भाषण हैं। रामलीला मैदान में कामन मीटिंग हो जाए। ये भी आ जाएं, हम भी आ जाएं।

श्री शशि भूषण : अध्यक्ष महोदय, श्री बनर्जी के प्वाइंट आफ आर्डर पर आपका क्या निर्णय है ? *(Interruptions)*

MR. SPEAKER : Now, the Home Minister. *(Applause.)*

SHRI PILOO MODY (Godhra) : Are they applauding communal riots ? Or what else is this applause for ?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI Y. B. CHAVAN) : This House has heard the debate for several hours. During the first few hours when this question was debated here, unfortunately, I was not present. So, I have missed some of the important speeches delivered in the course of the debate on this matter. I do not propose to speak in a spirit of replying to every point that has been raised here, because this debate has been occasioned by very unfortunate and rather shameful incidents that took place in many parts of Maharashtra. Naturally, the country and the Members here also felt angered about it, and criticism was made of the Government of Maharashtra and of this Government here as well. I can understand it as a criticism because it was natural when such horrible incidents took place. The conscience of the country must be roused and it was roused. I can understand criticism as far as this part is concerned But what is the intention of this House and of the political parties ? Are we going to draw some objective lessons from what is happening in the country because what happened in Bhiwandi has not happened for the first time. We have seen what happened in 1967 and even before that and had to deal with communal riots and the ugly forces which are really speaking at the root of those riots. That is a very dangerous and basic challenge to the very concept of the nation that we call India we shall have to look at it from this point of view. Whether I am at fault or Government is at fault or some political party is at fault we can certainly go into these questions and come to certain conclusions. Even then the debate has to be ultimately directed towards drawing some lesso s. I know we discussed these questions at the time of the riots in Bihar, in Ranchi in 1967. There were other occasions when we debated this question. We met in Kashmir and we came to certain conclusions. Somebody asked a very pertinent question : what have you done about those decisions ? I can give some details of what we have done about them. Ultimately, the question is whether we have reached a stage when we can say that we have succeeded. I can of course give information as to what we did about the conclusions we reached there. But one must admit that in spite of having done all those things we have not yet arrived at a solution. The problem remains. We decided on certain administrative steps. We met in different standing committees and we reviewed those decisions and we took further decisions how to implement them. We have sent many circulars and we have discussed it once or twice, just a few months back also. After the Gujarat incidents took place, the Prime Minister invited all the Chief Ministers and we all sat with them and reviewed the decisions that we took at Srinagar and tried to give further directions. The Standing Committee of the National Integration Council met many times and many leaders from the opposition parties have participated in those meetings. We have done all those things. We decided at the administrative level that intelligence agencies would have to be strengthened. Most of the State Governments have responded ; they were not only willing but were also taking steps to have some new intelligence cells to find out information.

We have also given instructions to see that the district Magistrates and the District Superintendents of Police should be made responsible for the prevention of communal riots ; wherever necessary we always try to send assistance in the form of police force, etc. All those administrative steps have been taken or at least efforts have been made in that direction. Ultimately we have realised, not for the first time of course, when we discussed this matter in the Standing Committee then also it was felt that mere administrative steps were not going to help us out of this particular difficulty. I am not pleading or making any apologia for the failures of the administration wherever they may have taken place. I do not want to take that position. Wherever the Governments have failed, whether in Gujarat or Maharashtra, I am not making any distinction between State and State.

If these state Governments are there, and if they are responsible, certainly they will have to face the consequences. Judicial enquiries in both the cases have been instituted. Let us wait for the conclusions of those enquiries. But, Sir, problem is not of mere administrative action. When all the political parties met, it was appreciated that it is not merely the administrative measures that are going to help us in this matter. We will have to create conditions in this country, create an atmosphere in this country, create public will, a very strong public opinion in this country and create such a political climate in this country that the fear of or suspicion against the minority communities must be completely removed. I personally feel that this, really speaking, is the basic cause of the whole trouble. (*Interruption*.)

SHRI J. B. KRIPALANI : Order has come to be established now in Maharashtra. Why was it not done before ? "Prevention which is better than cure."

SHRI Y. B. CHAVAN : I will come to that. First of all, I will deal with the general questions, because I do not want to give a feeling that I am talking only about the situation in Maharashtra. If I talk about Maharashtra, Shri Vajpayee might say that I am only talking about Maharashtra. Therefore, I do not want to give that impression. I am coming to those details. (*Interruption*.) I do not want to go away without giving the necessary information and my own views about what has happened in Maharashtra.

SHRIMATI SUCHETA KRIPALANI (Gonda) : We will excuse you.

SHRI Y. B. CHAVAN : I do not want to be excused also, because if I am at fault certainly I will have to face the consequences. Sir, the main point that I was emphasising was...

SHRI JANESHWAR MISRA (Phulpur) : As Home Minister, you have the greatest responsibility in this matter.

SHRI Y. B. CHAVAN : No doubt about it. I am not shirking that responsibility. (*Interruption*.) So, the basic thing is that the whole trouble has started because—and I think that was the general view of the leaders of all the political parties which met in the Committee—an atmosphere is being created in this country in which certain minorities are made to appear suspect in the mind of the majority. And once we create that feeling, naturally, an urge to seek protection is created in the mind of the minorities.

SHRI PILOO MODY : It is no solution.

SHRI Y. B. CHAVAN : If it is no solution, then what is the solution ?

SHRI PILOO MODY : Stop violence by maintaining law and order. (*Interruption*.)

SHRI Y. B. CHAVAN : Certainly, law and order must be maintained but not by merely taking police help...

SHRI PILOO MODY : How did you bring it under control ? By enforcing law and order.

SHRI Y. B. CHAVAN : I do not deny that law and order machinery will have to be used not only in the case of communal disturbances but in the case of other disturbances also. I entirely agree with you, but if we merely say that, that is going to be the final answer, I think we are deceiving ourselves completely. (*Interruption*.)

SHRI BAL RAJ MADHOK : Mr. Chavan, this is wrong. I wish you go deep

[Shri Bal Raj Madhok]

into the matter and unless you do that there is going to be no good remedy. (*Interruption.*)

SHRI Y. B. CHAVAN : Therefore, we will have to create conditions and positive conditions in this country to create a feeling that the entire nation stands committed to the protection of minorities in this country. It is in this sense. I think, that the Prime Minister said the other day that we will fight, we will fight on the streets ..(*Interruption.*)... I am sorry ; she said we will fight. It is not that she alone is going to fight. When she said that we will fight,—not in the streets ; she has not said that ..

SHRI M. L. SONDHI : I hope not in New Delhi.

SHRI Y. B. CHAVAN : ...she meant that we will fight for the whole country. She was not speaking personally ; she was not speaking for the Government alone, but when she said that, I think she reflected the mind and the voice of this nation as a whole. Therefore, this is the most important aspect of the problem. If we forget this particular aspect, I think we have lost the whole perspective of this problem. (*Interruption.*)

SHRI J B KRIPALANI : May I again request the Home Minister ? I want an answer to my question, why the steps taken afterwards were not taken before the riots began. (*Interruption.*)

SHRI PILOO MODY : Sir, I humbly request you to ask the Home Minister to eschew politics Let him do his job of maintaining law and order.

MR SPEAKER : If you interrupt once or twice, it is all right, but not frequently like this.

SHRI Y. B. CHAVAN : Having emphasised this aspect, I will make a reference to one more point. I would make a request to all the political parties. I am very glad we are all meeting on the 22nd of this month. Let us look to what we have to do. Only after two days, we are meeting in the Organizing Committee, as we call it, where representatives of all parties, including the party of Mr. Vajpayee, are going to come together to start a general campaign in the country to throw out this particular poison.

SHRI RANGA (Srikakulam) : Not under your leadership.

SHRI Y. B. CHAVAN : Your party has not agreed to come. That is a different matter. But all the other parties are coming.

SHRI RANGA : Not under this leadership. This is a bankrupt leadership.

SHRI Y. B. CHAVAN : That is your choice What can I do about it ? Let us appreciate that if we want to fight communalism, it is no use blaming one party or the other. Let us go down to the last man in the last village in this country and create a new atmosphere. If we do it, then alone we will succeed.

SHRI J. B. KRIPALANI : Then don't have the police and the army. Leave it to the nation.

SHRI Y. B. CHAVAN : I do not want to enter into controversies with Acharya Kripalani. Coming to what happened in Bhiwandi and Jalgaon ..

SHRI J. B. KRIPALANI : Why do you maintain the police and the army ?

SHRI Y. B. CHAVAN : The army and police are there because the Government is there and the Government will govern.

SHRI RABI RAY (Puri) : It did not govern in Bhiwandi.

SHRI PILOO MODY : Where is the Government in this country ? (*Interruptions*).

SHRI Y. B. CHAVAN : If the Government has to govern, it has to govern in certain ways. It works through the process of law ; the rule of law has to function. The Government has to work through certain procedures. It has to function democratically. This is not a dictator's Government that only because we have the police and the army, we can do anything. It cannot be done like that. (*Interruptions*).

MR. SPEAKER : All of you, please sit down.

SHRI ANBAZHAGAN (Tiruchengode) : On a point of order, Sir. The way in which hon. member of this House behave when they do not agree with each other's views – this is the basic cause for the communal riots in the country. Unless this behaviour changes, the whole nation is going to be on fire.

MR. SPEAKER : I do not know. That may be the case for the whole nation. But it is the greatest danger to this House and the Parliamentary system of government.

SHRI Y. B. CHAVAN : Constantly the question has been raised about the maintenance of law and order. As I said, it is the duty of the government to govern and government will govern. But some peoples' concept of law and order is very different. For instance, my concept of law and order is very different from the concept of Shri Piloo Mody. He would like the people to be shot down...(*Interruptions*) He represents vested interests which I do not represent.

SHRI PILOO MODY : May I know whom you represent—the goondas in this country ? Don't make such charges against me. Whom do you think you are representing ? You can use that language with some body else ; not with me.

SHRI J. B. KRIPALANI : I want to ask only a simple question. Have you been able to restore law and order with your police or your unity conferences ?

SHRI Y B. CHAVAN : I have heard the speech of our elder friend very attentively. I am prepared to listen to him again. But I do not want to be interrupted.

Coming to Bhiwandi and Jalagaon, it is a fact that both these places had a history of communal harmony.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : Not in Bhiwandi.

SHRI Y. B. CHAVAN : I would like him to see the history of Bhiwandi. With the knowledge of what little time I have spent in the national movement in that part of the country I can say that a large number of Hindu families and Muslim families were working shoulder to shoulder like members of the same family in the pre-independence days . (*Interruptions*)

SHRI M. L. SONDHI : How can you say...

MR. SPEAKER : I am fed up with this member.

SHRI M. L. SONDHI : If you cannot show this much patience, how can you expect the country to have patience ?

अध्यक्ष महोदय : मैं नहीं चाहता आखिरी दिन उठने से पहले इनको नेम करूं।... (व्यवधान)...

SHRI M. L. SONDHI : Sir, you must allow us...

MR. SPEAKER : Will you please sit down ?

SHRI M. L. SONDHI : Sir, in this way ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER : I would request the hon. Member to kindly withdraw from the House. This is not the way to behave in this House.

SHRI M. L. SONDHI : Sir, how can you say that you are fed up with me ?

MR. SPEAKER : I would request Shri Vajpayee to take note of this. This is not fair.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने की इजाजत दी थी। लेकिन कितने लोगों ने टोका और आपने किसी को नहीं कहा कि बाहर जाइये।

अध्यक्ष महोदय : आप प्रवोक करते हैं हरएक को। प्रवोक करने से ही ऐसी सिचुएशन हो जाती है। ...(व्यवधान)...

SHRI M. L. SONDHI : I will not be cowed down by this...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER : Please sit down or I will have to deal with you.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, टोका टाकी दोनों तरफ से हो रही है ।

अध्यक्ष महोदय : टोका टाकी की भी कोई हद होनी चाहिये । आप भी उस को डिफेंड करने लगे । मैं नहीं समझता था कि आप भी उस को डिफेंड करेंगे, औरों की तो छोड़िये ।

SHRI Y. B. CHAVAN : I do not know what they found objectionable. When I said that relations between both Muslims and Hindus have been very agreeable for decades together. There were Hindu and Muslim families who were traditionally nationalists not only for profession's sake but they had also participated in the freedom struggle for generations together. This is the background of this place.

Unfortunately, in recent years certain wrong trends have started asserting themselves in that part. Some mention was made by Shri George Fernandes that certain speeches were made. Somebody may ask, "Why don't you go and get those speeches examined by the police." I will certainly do so but it is the responsibility of the political leaders to find out what ultimately the man in the last unit speaks. I endorse the request made by Shri Geroge Fernandes that Shri Vajpayee should go and see the speeches delivered by the President of the local Jan Sangh in this matter. There were bodies which were created in the name of Rashtriya Utsav Mandal, Sri Ram Mandal and some sort of Mandal. I know there are also Muslim communalist elements who asserted themselves in Bhiwandi which is also equally condemnable. I am not trying to protect them. Communal minded forces are also there.

AN HON. MEMBER : What about Shiv Sena ?

SHRI Y. B. CHAVAN : I am coming to Shiv Sena. I am not supporting Shiv Sena. These forces were creating such conditions, at the time of the procession of Shiva Jayanti. I must say it was the effort of very wise leaders among Muslims to see that this thing goes off peacefully, and some people who do not belong to either of the parties—there were some people who are old nationalists and freedom fighters—wanted to take a lead in this matter and see that an atmosphere of understanding is created. It is a fact that the tension which was being built in that area was known to Government also, and the district officers were taking action in that matter. Some time in the middle of April a meeting of both the parties was called to find out how we could evolve a sort of agreeable programme for this occassion and it was at that time—hon'ble Member Shri George Fernandes read some parts of the speech –that some of the leaders of the Muslim community did make certain suggestions. Unfortunately, those suggestions were propagated as if they were putting impossible conditions. It was the intention of the Muslims to enable themselves to participate in the procession of Shiva Jayanti. They did not want it to be treated as a religious procession as they thought it was the procession of a national leader and it should be treated as a national procession. If they made the suggestion that let us not use 'gulal' ··

SHRI KANWAR LAL GUPTA : Why ?

SHRI Y. B. CHAVAN : Here comes the poison. Because it is a question of commonsense, on such occasions it is the experience of every town that whenever such processions go near the mosque there is a tendency to use 'gulal' and throw it on the mosque also and it creates trouble. What is wrong about this suggestion ? If they suggested, let us not use slogans hurting the feelings of any particular community, what is wrong about it ? I should say that this suggestion was very prophetic. Having agreed about the slogans, it is a fact that certain elements in the procession broke that promise and gave slogans "Muslim Chor Hain". I know there were a large number of Muslims in the procession. Their position became impossible. Their positionb ecame embarrassing. They had to leave. Some people were arrested by the police. Some hon'ble Members wanted to know what the police were doing ? Police was there all the time. When there was an agreed route, agreed slogans they wanted to be there to see that the processionists behave and that the procession is peacefully completed. Nearly 700 police were there.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : Unarmed.

SHRI Y. B. CHAVAN : Unfortunately, Vajpayeeji has always worked as an Opposition Member. He does not know how to run an administration.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : Tell me how the administration is run.

SHRI Y. B. CHAVAN : When there is a procession of 7,8,000 people, going through very narrow streets of a city which has a background of tension, if you keep armed police all along the procession, you do not know what will happen. It was a very wise decision of the police that they did... (*Interruption*)

SHRI S. M. JOSHI (Poona) : May I say that when the Muslims complained that slogans which were not agreed to were being given, the Collector asked them, "What shall I do ; shall I ban this procession here and now ?" They themselves said that he could not do that at that time.

SHRI Y. B. CHAVAN : When a procession is in movement, it is very difficult to take any decision because it may ultimately create a very ugly situation there. Therefore, they tried to arrest some people. Then tension was created and a demand was made not to arrest those people. They again promised that they would not shout those slogans. But again those slogans were shouted. That created a condition which was beyond the control of anybody. I wish, sometimes a Member of this House takes the responsibility of controlling processions under those circumstances. Then they will know what exactly law and order means.

SHRI M. L. SONDHI : Alibi.

SHRI Y. B. CHAVAN : It is not an alibi.

SHRI M. L. SONDHI : One day you were known as a good administrator. Ten years ago you were known as a good administrator. I worked under you and I know that you were a man of guts then. But today you are known as a paper tiger.

SHRI BAL RAJ MADHOK : We did that in Delhi. When the Ramlila procession was going, some people threw a dead calf in a gunny bag. But we saved the situation in Delhi.

SHRI Y. B. CHANAN : I am glad that Shri Sondhi gave me a compliment for the past. I can reciprocate it. I had a very good opinion about him as an officer. But I do not hold the same opinion about him now.

SHRI M. L. SONDHI : You have set very bad trends.

MR. SPEAKER : I am completely helpless against you.

SHRI Y. B. CHAVAN : At this point I must say that both the communities played mischief here. I do not say that merely the Hindus did it. The Muslims also did it, because Muslim communalism was also at work there.

Now, whether the police should immediately have resorted to firing or whether they could have effectively done it or not, is a matter of detail ; this is a matter of inquiry. In these matters, naturally, the judicial inquiry commission will enquire. But from whatever I saw I must say that I found the SP and the Collector, whom according to a Srinagar decision we are holding responsible, without sleep for two days. When I went on the 9th I saw the District Magistrate without any voice ; he had injured himself in this procession and he was doing his best. But when things had gone completely out of control, when indisciplined elements from both the communities had allowed things to go out of control of anybody, it was his effort to see that everything was controlled.

I was asked how is it that they ultimately succeeded after three days. When you organise things properly, when they had the police force at proper places, when they could organise the saner elements in the community also to come to their help, gradually they succeeded in creating better conditions. Things did not come to normalcy immediately.

DR. SUSHILA NAYAR (Jhansi) : It is not correct. When there was firing, it was controlled.

SHRI Y. B. CHAVAN : I know, things were going bad for three, four or five days.

श्री लखनलाल कपूर : मैं भी वहां गया था । जिस तरह से दंगे के बाद आपने आर्म्ड पुलिस को जगह-जगह बैठा दिया शहर के अन्दर, उसी तरह जब टेंशन था तो उस समय आपने उस तरफ का पिकेटिंग क्यों नहीं किया ?

SHRI Y. B. CHAVAN : What steps the State Government had taken before that is a matter of inquiry. Let the Judge come to that conclusion. If they had failed in their duty, they would certainly face the consequences.

But, as I was saying, the things did not come to normalcy immediately. It took 3-4 days. Immediately from the 8th or 9th onwards, a large number of people were leaving that place when all sorts of rumours were there. A large number of people went to villages ; a large number of people went to Thana and other places. They went with all sorts of stories. In these circumstances, no amount of contradictions could help. I know, when I was going to Bhiwandi, we stopped on the way at nearly half a dozen places to stop these people from going and we told them, 'For God's sake, don't go away. But if you must go, don't tell all sorts of stories.' They said that they will not do that. When they went, no amount of persuasion, no amount of contradiction, could help in such circumstances. There is some sort of, I should say, a madness in this thing.

I can only say that the administration there tried to do their utmost. But when these conditions are created, when the poison is created in the minds of everyone there, how can you control by police *danda* or *kanon*. It was just not possible.

Coming back to Jalgaon, I have nothing to say in defence of the administration there. Because what happened in Jalgaon is something that hurts me. Possibly, again, even now, my hon. friend, Shri Vajpayee, will say that I am feeling rather hurt and my emotions are aroused because I am from Maharashtra. I am from Maharashtra. I cannot help it. Everybody is born in some State, in some language group. Nobody can help it. But I am glad that at least for the people of Maharashtra, I have got tears in my eyes. I wish the same thing for Shri Vajpayee and, I hope, at least for his own people, he will have tears. It is the human value that matters most. Whether I am a leader of this small area or even if I am not a leader at all, I pray to God that my human values are kept intact. That is much more important than anything else.

At least, there was some tension in Bhiwandi. But in Jalgaon, there is absolutely no history of communal tension behind it. For the last 40 years, I know that this was the place which has had conventionally, traditionally, a secular character. Even today, although the hon. Member of this House, Shri Sayyad Ali, who represents that area, is not a national leader etc. he is a very leading practitioner in Jalgaon was elected with an overwhelming majority from that place. It shows the understanding between the people there. The Muslims in that city are not more than 6 to 7 per cent. That is the history of this place. But this poison of communalism which is created in the country has also got planted there. Something of this madness had reached there also. There was the Shivaji Jayanti procession there a day before and it went off peacefully. And the next day, suddenly, there was some sort of a scuffle at some gambling place—I do not know whether that is really responsible for it ; that is what is given out—within 2½ to 3 hours, nearly 200 Muslim houses were burnt and many people were burnt in the houses . (*Interruption*)

SHRI J. B. KRIPALANI : May I again interrupt him ? He has been talking of communalism over and over again. Whose procession was that ? Was it the procession of Hindus or the procession of the Shiv Sena ?

SHRI Y. B. CHAVAN : He is only blinding himself to certain facts. This procession, as I said, in Bhiwandi was both of Muslims and Hindus.

SHRI J. B. KRIPALANI : Was it a Shiv Sena procession or a Hindu procession ?

SHRI Y. B. CHAVAN : I am coming to that. Let me go to the question of Shiva Sena again. I have no doubt that Sena element has done the greatest harm to Maharashtra. I can say that—I have said it before—I have always suffered at the hands of Shiv Sena ; I have always condemned Shiv Sena as a very retrograde force, a force which is not only against the interests

of India but, I should say, against the basic concept of human values *(Interruptions)*

AN HON. MEMBER : Ban it.

SHRI ATAL BIHAR VAJPAYEE : You had an alliance with Shiv Sena in the Bombay Corporation elections.

SHRI Y. B. CHAVAN : Not at all. I would, on the contrary, have to say that your party workers had many things to do with Shiv Sena I am prepared to prove that. There is no use merely holding some Party responsible. But, at the same time let me make a request to this hon House. Let me make a request now. I forget for a minute that I am Home Minister. I would like to make a very honest request. Don't try to identify the people of Maharashtra with the Shiva Sena. Please don't do that. This will be the greatest injustice to Maharashtra.

20.00 hrs.

SHRI UMANATH (Padukkottai) : That nobody has done. Why do you bring in that ?

SHRI Y. B. CHAVAN : I know. Thank you very much for that. You have not said that but some others have said that. I am not saying that you have said that. You made it clear when you started the debate last time. You had specifically made that point clear. I know that.

SHRI UMANATH : Who has said it ? Nobody has said it.

SHRI Y. B. CHAVAN : I would like to say that this Shiva Sena element also has made the name of Maharashtra bad. Whenever they support the cause of Maharashtra, I think that cause ultimately suffers. The question which is rightly asked is : What is it that the Government of Maharashtra is doing about the Shiva Sena ? That is a legitimate question.

SHRI RANGA : And the Government of India also.

SHRI Y. B. CHAVAN : Government of India also. That is a question that you and I will have to come together and solve.—It is not enough to take to merely what the Government of India does against all these regional senas.—We are no doubt trying to analyse the problems of regional forces and of communal forces and their violent activities. But this is the question which the leaders of this House will have to sit and think about. It is not enough if only one Party acts, it is as a House we have to discuss question.

As far as Maharashtra is concerned, I have many times discussed this question with the Chief Minister of Maharashtra. This question has been discussed on the floor of Maharashtra Assembly also very recently. I have got some extracts of the speech he gave in the Maharashtra Assembly. He has five given figures that since February, 1969 hundreds of Shiva Sena workers have been prosecuted and many of them have been sentenced. Even the leader of Shiva Sena, Mr. Bal Thackeray was arrested under the Preventive Detention Act. Certain prosecutions have been started against him. In one prosecution he was convicted in the Magistrate's Court. But the District Court acquitted him. The Government of Maharashtra has gone in appeal against that. Ultimately, the Government of Maharashtra also will have to work through the processes of law. Well, I know, this is a matter which the Inquiry Commission will have to go into. The element of Shiva Sena in Jalgaon and the elements of Shiva Sena in Bhiwandi also are responsible for the trouble. This is the impression I have got. These are matters which are to be gone into very carefully and deeply by the judicial inquiry. I really do not want to make any judgment. Therefore, if I can make an appeal in the name of this House, I would like to tell those people who are being guided or misguided by the Shiva Sena, do take a lesson from this because they are in no way serving the cause of Maharashtra nor serving the cause of the nation. I would like to have genuine co-operation in this matter from many other members with whom possibly I may talk on this matter.

There is no question of giving any protection to the State Government when we are committed to certain political idiology because we believe in those ideologies. We believe in certain principles. Therefore, the principles for which we stand have nothing in common with the principles for which any regional organization or communal organization stands for.

AN HON. MEMBER : Preventive detention is there for you.

SHRI Y. B. CHAVAN : I told you that even preventive detention was made use of. Not that it was not made use of. Preventive detention was used against him but he was released by the High Court.

Somebody said —I think it was Bakshi Saheb—that so many people have been killed and 'how many people you have hanged ?' I wish I was a dictator hanging people like that. I would speak of Maharashtra again. because we are discussing riots in Maharashtra ; I will only give certain facts. In the last year and a half, riots took place in Aurangabad. Riots took place in Nagpur.

Sir, one more item on which we are emphasising is that in the case of these riots prosecutions should be very energetically instituted. I have got some figures about prosecutions pursued by Maharashtra Govern ment. If the hon. Member is interested I can give them. Large number of people were prosecuted in Aurangabad and Nagpur. I am glad to inform the House that in many instances the cases ended in convictions and some people were sentenced to life imprison ment and many people were sentenced from one year to seven year terms. Therefore, it is not that efforts were not made in this matter. If you want to condemn the Govern ment or the Chief Minister, you do so but at least give them their due for whatever efforts they have made.

श्री मधु लिमये : मन्त्री महोदय श्री बसन्त राव नायक की बहुत सफाई दे रहे हैं। जब कौंसा में शिव सेना द्वारा हिन्दू मुसलमान का मामला उठाया गया, तो मैं ने उनको दो महीने पहले चिट्ठी लिखी। मुझे वही एक ऐसे मन्त्री मिले हैं, जिन्होंने मेरे पत्र का उत्तर तक नहीं दिया, ऐकनालेजमेंट तक नहीं भेजा। वह कभी भी उत्तर नहीं देते हैं। उन में उद्दंडता आ गई है। शिव सेना के बारे में मन्त्री महोदय की राय जो भी रही हो, लेकिन श्री बसन्तराव नायक की सरकार ने शुरू से ही शिव सेना को प्रोत्साहन दिया है। मन्त्री महोदय इस बात को काट नहीं सकते हैं।

SHRI Y. B. CHAVAN : Well. Sir, I don't know ; I will certainly find out why the reply was not given to him.

श्री मधु लिमये : वह पत्र हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न के बारे में था। अगर वह किसी और विषय के बारे में होता, तो मैं परवाह न करता।

SHRI Y. B. CHAVAN : The point is, whether he took any action against the communal elements there or whether he did not. The point of reply also is important and I will go into it. I know that the Chief Minister of Maharashtra is certainly very careful about these matters.

श्री मधु लिमये : उन में कोई सेन्सिटिवनेस नहीं रह गई है।

SHRI NATH PAI : Normally the Government does not condescend to reply to letters and that is our experience. It does not condescend to reply to letters of M.Ps. I have experience of this. The Chief Minister does not condescend to acknowledge or reply to letters.

श्री मधु लिमये : उन में बहुत उद्दंडता आ गई है।

SHRI Y. B. CHAVAN : I am very sorry to hear this... (*Interruptions*)

SHRI J. B. KRIPALANI : During the Bombay riots, is it a fact that the Government asked the leader of the Shiv Sena in Jail to give a statement to the people to keep quiet and not to disturb the peace ? Is that a fact.

SHRI Y. B. CHAVAN : It is not a fact as much as I know. I know during the riot, that man was arrested and placed in Jail.

SHRI J. B. KRIPALANI : It appeared in the papers that that is what had happened...

SHRI Y. B. CHAVAN : He was in jail...

SHRI J. B. KRIPALANI : From jail he was asked to issue an appeal.

SHRI Y. B. CHAVAN : He did issue the appeal. That cannot be helped. (*Interruptions*)

SHRI J. B. KRIPALANI : No body can issue an appeal for peace from Jail unless the Government allows it.

श्री मधु लिमये : श्री पीलु मोदी की पार्टी भी शिव सेना के साथ मोर्चा बना रही थी और जेल से उन के सन्देश ला रही थी ।

श्री राम सेवक यादव : श्री वसन्तराव नायक आजादी मार्का कांग्रेसी हैं या पुराने कांग्रेसी हैं ? (*Interruptions*)

SHRI MADHU LIMAYE : We know this...

SHRI Y. B. CHAVAN : This is not very relevant—I should say. Are you going to say that those who have not participated in the freedom struggle are not patriots in this country—as if they have nothing to do in this country ?

SHRI BAL RAJ MADHOK : I hope that this argument—that Jan Sangh did not take part in the freedom struggle, will not be used again.

SHRI Y. B CHAVAN : So far as the Shiv Sena is concerned, I have given my own assessment of it. (*Interruptions*) My appeals is meant for those who care for it. What is the use of my making an appeal to those who would not care for it ?

Going back again to the basic question, I have given details about this particular incident. What has hapdened is something very bad. But we should not merely say that it is bad, but also make efforts to see that such worst things do not happen in this country. And, in that, I quite agree with what the Hon. Member has said, that this question will have to be treated as a national question. It will have to be completely taken out of the party context and therefore, now is a test for us, for all of us. It is a test for all of us in the programme that we are going to have for creating a new atmosphere in this country.

If we do that then alone this country as a nation, has a future. If we don't succeed in this effort, I don't know what is the future that is in store for us.

20.10 hrs.

CONVICTION OF MEMBER

(Shri Ram Gopal Shalwale)

MR. SPEAKER : I have to inform the House that I have received the following communication, dated the 20th May, 1970, from the Judicial Magistrate, 1st Class, Parliament Street, New Delhi :—

> "Shri Ram Gopal Shalwale, Member, Lok Sabha, was produced in the Court along with his other co-accused to stand their trial in this Court for an offence punishable under Section 188, Indian Penal Code. He was served with a notice according to law and he has pleaded guilty to the charge. By this court order dated the 20th May, 1970, I have convicted Shri Ram Gopal Shalwale and others under Section 188, Indian Penal Code and have sentenced each of them to imprisonment till the rising of the Court."

———

MR. SPEAKER : Thank you very much.

SHRI PILOO MODY : A vote of thanks to the Chair may be intorudced in Parliament.

MR. SPEAKER : Thank you very much. I am very glad that we will all have rest, specially myself, for some time.

The House now stands adjourned *sine die.*

20.11 hrs.

The Lok Sabha then adjourned sine die

Printed at Akashdeep Printers, 20 Daryaganj, Delhi-6.